



सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्  
भा. प्र. सं. इन्दौर  
IIM INDORE

भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

# ज्ञान विश्वर

षष्ठम अंक, वर्ष 2021





सिद्धिमूलं प्रबन्धनम्  
भा. प्र. सं. इन्दौर  
IIM INDORE



## एक झुलक

उच्च गुणवत्ता की प्रबंधन शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से, उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने, भारतीय प्रबंध संस्थानों की स्थापना, उत्कृष्टता संस्थानों के रूप में की है। यह संस्थान, उद्योगों के साथ शिक्षण, अनुसंधान और विचार-विमर्श के लिए, विश्व के श्रेष्ठतम प्रबंधन संस्थानों के रूप में पहचाने जाते हैं।

1996 में स्थापित, आईआईएम इंदौर शासकीय सहायता प्राप्त प्रबंधन स्कूलों के परिवार में छठा है। अपनी स्थापना के बाद से, आईआईएम इंदौर उद्योग, सरकारी-क्षेत्र और सार्वजनिक-क्षेत्र के उपक्रमों के साथ विचार-विमर्श कर, प्रबंधन शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्व कर रहा है। आईआईएम इंदौर सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1973 के तहत एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत है।

एक मनोरम पहाड़ी के ऊपर स्थित, आईआईएम इंदौर का 193 एकड़ का परिसर, मननशील अध्ययन के लिए, एक आदर्श परिवेश प्रदान करता है। आईआईएम इंदौर में नवीनतम शिक्षण सामग्री, अध्ययन के समृद्ध संसाधन, एक सुदृढ़ सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र, अत्याधुनिक खेल संकुल एवं छात्रावासों के साथ-साथ समकालीन आधारभूत सुविधाएं भी हैं।

## मिशन

आईआईएम इंदौर सामाजिक रूप से जागरूक प्रबंधकों और उद्यमियों को विकसित करने वाले, विश्व स्तरीय शैक्षिक मानकों के साथ, एक प्रासंगिक बिजनेस स्कूल होना चाहता है।

आईआईएम इंदौर निम्न के लिए प्रतिबद्ध है:

- ♦ प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता, अनुसंधान और प्रशिक्षण
- ♦ समकालीन भागीदार केंद्रित शिक्षण और शिक्षण विधियों का प्रयोग
- ♦ प्रबंध शिक्षा के उभरते क्षेत्रों में उपस्थिति

## प्रतीक चिन्ह

संस्कृत शब्द सिद्धिमूलं प्रबन्धनम् में, यह विश्वास निहित है कि, सभी उपलब्धियों के मूल में प्रबन्धन है।

यह चार खण्डों में एक चक्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है। सामूहिक रूप से ये एकल भाग दर्शाते हैं कि, प्रबंधन बहु-आयामी है एवं एकीकृत पूर्णता की रचना करता है। नीले रंग में खण्ड, वृत्त के तीन चतुर्थांश बनाते हैं जबकि बाहर खुला हुआ चौथा खण्ड, परिवर्तनीय परिवेश के लिए ग्रहणशीलता को दर्शाता है।



ज्ञान शिखर षष्ठम अंक

वर्ष 2021-22

**संरक्षक:**

प्रोफेसर हिमाँशु राय

निदेशक

**मार्गदर्शक:**

कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि (सेवानिवृत्त)

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

**संपादक:**

जयनाथ यादव

राजभाषा अधिकारी

**सह संपादक:**

राजेश कुमार श्रीवास्तव

**पत्राचार का पता:**

संपादक

ज्ञान शिखर, राजभाषा अनुभाग

प्रबंध शिखर, भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

राऊ-पीथमपुर रोड, इंदौर 453556 (म.प्र.)

दूरभाष 0731-2439629

नोट: पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए संपादक मण्डल तथा भारतीय प्रबंध संस्थान, इंदौर किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

## अनुक्रमणिका

सर्वश्री/सुश्री/श्रीमती/कुमारी

1.	निदेशक की कलम से		03
2.	मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का संदेश		04
3.	संपादकीय		05
4.	राष्ट्रीय सुरक्षा: जन स्वास्थ्य की संकल्पना	-	कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि 06
5.	पश्चाताप (संस्मरण)	-	राजेश श्रीवास्तव 09
6.	कहानी	-	रिमिशा जैन 10
7.	करो ना ... कविता	-	भव्या मिश्रा 13
8.	जीवन है अनमोल कविता	-	श्याम राव 13
9.	वक्त कविता	-	गिरिजा कुमार 14
10.	क्या वो ज़िंदगी ... कविता	-	अक्षिता श्रीवास्तव 14
11.	मौसम कैलेन्डर कविता	-	अवनीश कुमार 15
12.	खेलों का जादू	-	शुभ्रा कुमारी 15
13.	समस्या का समाधान	-	कीर्ति श्रीवास 16
14.	आज़ाद परिंदे कहानी	-	अभिषेक सोनी 17
15.	अंधकार में ... कविता	-	विवेक पन्त 18
16.	कीट भक्षी पौधों ... लेख	-	कंचन विश्वकर्मा 19
17.	सुदृढ़ शिक्षा ... लेख	-	डॉ. अनन्या मिश्र 20
18.	शायरी	-	जूही रामचंदानी 22
19.	एहसास कविता	-	हेमंत सेठी 22
20.	वक्रत कविता	-	वेरोनिका भगोरिया 23
21.	वजूद कविता	-	शुभ्रिका श्रीवास्तव 23
22.	मां तू भूल गई मुझको कविता	-	प्रतिभा त्रिपाठी 24
23.	वैश्विक परिदृश्य ... लेख	-	शैलेश टटवारे 25
24.	सपने	-	मयंक रमनानी 26
25.	एक विचार एक चिंतन	-	डी. कोडवानी 27
26.	मनमधु	-	पल्लवी चौहान 31
27.	औरत हूँ मैं कविता	-	निधि बेदी गुप्ता 33
28.	द्वैत और अद्वैत ... लेख	-	प्रवाह शुक्ल 34
29.	मैं बस हिंदुस्तान हूँ, युवा असमंजस कविता	-	सतीश भार्गव 35
30.	इसी का नाम तो प्रेम है कविता	-	सतीश भार्गव 36
31.	उम्मीद कविता	-	रंजना चौरै 36

## निदेशक की कलम से...



**प्रोफेसर हिमांशु राय**

निदेशक

भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

ज्ञान शिखर का छठवाँ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

देश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में संस्थान की सार्थक एवं महत्वपूर्ण भूमिका है। सामाजिक रूप से जागरूक प्रबंधकों एवं उद्यमियों को विकसित करने में संस्थान विश्व स्तरीय शिक्षण मानकों के साथ एक प्रासंगिक व्यावसायिक प्रबंध संस्थान है, जहाँ व्यावसायिक कारोबार एवं प्रबंधकीय कौशल की आवश्यकताओं के अनुरूप उच्च स्तरीय प्रबंधकीय शिक्षा प्रदान की जाती है। भारतीय शिक्षा पद्धति में भावना, ज्ञान एवं कर्म की समानता से युक्त व्यक्ति को सुसंस्कृत माना गया है। जिन मनुष्यों में निष्ठा, उदारता, दृढ़ता, ईमानदारी, दया, परोपकार, नैतिकता, आत्म नियंत्रण और सम्मान जैसे मानवीय मूल्य होते हैं उन्हें समाज बड़े ही आदर और सम्मान के साथ देखता है। वास्तव में ऐसे मनुष्य समाज की संपत्ति एवं धरोहर होते हैं। वे न केवल स्व-अनुशासित जीवन जीते हैं, बल्कि अपने आस-पास के लोगों में भी ऐसी भावना विकसित करने तथा सर्वश्रेष्ठता लाने में उनकी मदद करते हैं। संस्थान अपने शिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से इन मूल्यों पर भी बल देता है।

कोविड महामारी ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। बहुत सारी पुरानी परंपराएँ एवं प्रथाएँ टूटी हैं, समय की मांग के अनुसार संस्थान ने जहां अपनी शिक्षण पद्धति को अविलंब डिजिटल मोड में ढालते हुए शिक्षण कार्यक्रमों को निर्बाध रूप से सतत जारी रखा वहीं अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति भी पूरी तरह सजग रहा है, लॉकडाउन अवधि के दौरान जहाँ आवश्यक हुआ स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर इस महामारी से लड़ने में अपना भरपूर योगदान दिया। संस्थान अपनी सामाजिक जिम्मेदारी निभाने में सदैव आगे रहा है।

हिन्दी भाषा आधुनिक आर्य भाषाओं में से एक है। आर्य भाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत है, जो साहित्य की परिनिष्ठित भाषा थी। वैदिक भाषा में वेद, संहिता एवं उपनिषदों – वेदांत का सृजन हुआ है। वैदिक भाषा के साथ-साथ ही बोलचाल की भाषा संस्कृत थी, जिसे लौकिक संस्कृत भी कहा जाता है। संस्कृत भाषा में ही रामायण तथा महाभारत जैसे ग्रन्थ रचे गये। वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष, भारवि, माघ, भवभूति, विशाख, मम्मट, दंडी तथा श्रीहर्ष आदि संस्कृत की महान विभूतियाँ हैं। इसका साहित्य विश्व के समृद्ध साहित्य में से एक है। साहित्य संस्कृति का बोध कराती है। किसी काल के मानव जीवन रहन सहन एवं उनकी गतिविधियों को उस काल के साहित्य में देखा जा सकता है। जो कुछ हम पर बीतती है, वही अनुभूति, अनुभव की चोट हमारी कल्पना जगत में पहुँच कर साहित्य सृजन की प्रेरणा देती है।

संस्थान अपने राजभाषा के क्रियान्वयन के उत्तरदायित्वों के प्रति सजग है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें, कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशालाएं नियमित रूप से डिजिटल माध्यम से आयोजित की जाती रही हैं। संस्थान की समृद्ध पुस्तकालय में हिंदी भाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं की प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं के संकलन के लिए एक कोना खोला गया है, इसके साथ ही बच्चों के लिए भी बाल पुस्तकों का संकलन किया गया है। देश की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकता को मजबूत करने में संस्कृत, हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का उल्लेखनीय योगदान है। इनका संवर्धन एवं विकास करना हम सबका दायित्व है।

राजभाषा के क्रियान्वयन की दिशा में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। इसी शृंखला में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों को परिलक्षित करता है। मैं आशा करता हूँ कि ज्ञान शिखर, संस्थान के सदस्यों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को हिंदी भाषा के माध्यम से उजागर करने हेतु एक उपयुक्त प्रयास सिद्ध होगा। संपादक मंडल एवं रचनाकारों को शुभकामनाएं एवं बधाई।

## मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का संदेश



कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि  
(सेवानिवृत्त)  
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी  
भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

संस्थान की पत्रिका ज्ञान शिखर का छठवाँ अंक आप सबके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। सामासिक संस्कृति, आर्थिक उन्नति एवं सामाजिक विकास में भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा भावनाओं, विचारों एवं सदियों की जीवन पद्धतियों एवं आदर्शों को अपने भीतर समाहित रखते हुए, इन्हें नई पीढ़ी को हस्तांतरित करती हैं। जैसा कि हम जानते हैं भाषा और साहित्य का संबंध अटूट है, भाषा के बिना साहित्य की रचना संभव नहीं और जब साहित्य होगा तो भाषा का विकास स्वतः ही होता रहेगा। वर्तमान में हिंदी भाषा अपनी समन्वय शक्ति के कारण पूरी दुनिया में पहचान बना चुकी है। हिंदी भाषा में विश्व की अनेक भाषाओं के शब्द समाहित होकर इसकी शब्द भंडार को समृद्ध कर रहे हैं। हिंदी संघ की राजभाषा के साथ-साथ हमारी राष्ट्रीय पहचान भी है। यह बहुसंख्यक भारतीयों की भाषा तथा अन्य भारतीय भाषा समुदायों को जोड़ने का माध्यम भी है तथा सम्पूर्ण भारत में बोली और समझी जा रही है। विदेशों में भारत से आए अप्रवासी भारतीयों ने अमेरिका, मारिशस, साउथ अफ्रीका, सिंगापुर, नेपाल, न्यूजीलैंड, जर्मनी आदि देशों में हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं।

हमारा संस्थान कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को सतत बढ़ाएं जाने हेतु प्रतिबद्ध है। संस्थान में नियमित रूप से हिंदी कार्यशाला एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया जाता है। ज्ञान शिखर का प्रकाशन संस्थान की राजभाषा विभाग का एक सराहनीय एवं प्रशंसनीय प्रयास है।

ज्ञान शिखर के संपादक मंडल और रचनाकारों को बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

जय हिन्द !

## संपादकीय



**जयनाथ यादव**

राजभाषा अधिकारी

भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

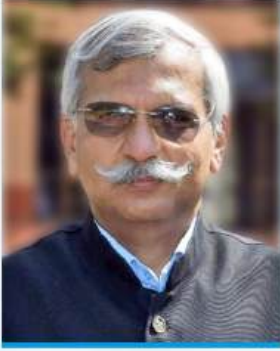
संस्थान की हिंदी पत्रिका ज्ञान शिखर का छठवाँ अंक हिंदी दिवस के पावन अवसर पर प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम, राष्ट्र प्रेम है। पत्र – पत्रिकाएं हमारी रचनात्मक प्रतिभा को उभारने उसे लेखनीबद्ध करने का एक सशक्त माध्यम होती हैं। साहित्य सृजन सामाजिक जीवन के विभिन्न क्रिया-कलापों में से एक है। श्रेष्ठ साहित्य केवल समाज को प्रतिबिम्बित ही नहीं वरन् उसे प्रभावित भी करता है समाज और राष्ट्र निर्माण के काम आता है। लोक तंत्र में शासन जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए होता है। अतः जनता की भाषा में शासन – प्रशासन से ही जन कल्याण एवं सुचारु शासन संभव है। यदि ऐसा नहीं होगा तो लोक की भाषा तंत्र नहीं समझ पाएगा और तंत्र की भाषा को लोक। गोस्वामी तुलसीदास जी का पद – जे पाकृत कवि परम सयाने, भाषा जिन्ह हरे चरित बखाने। कीरति भनिति भूत भल सोई, सुरसरि सम सब कर हित होई। अर्थात् जनभाषा में रचित साहित्य ही गंगा की तरह सबका हितकारी हो सकता है। हर काल में विद्वानों, समाज सुधारकों, संत महात्माओं ने शासन प्रशासन की भाषा के लिए लोक भाषा को श्रेयस्कर माना है। राजभाषा हिंदी विश्व की महान भाषाओं में से एक संस्कृत की पुत्री है, शब्द भंडार की समृद्धि इसे विरासत में मिली है। प्रत्यय एवं उपसर्ग के साथ नए शब्द गढ़ने, अन्य भाषा के शब्दों के साथ समन्वय बनाने, उन्हें आत्मसात करने की इसमें प्रबल शक्ति एवं क्षमता है। अतः हिंदी किसी भी विषय की अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त एवं वैज्ञानिक भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है।

संस्थान अपनी तमाम शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ राजभाषा के क्रियान्वयन की दिशा में भी सतत् आगे बढ़ रहा है। प्रशासनिक कार्यों में उच्च अधिकारियों द्वारा राजभाषा हिंदी का प्रयोग अधीनस्थ कार्मिकों के लिए अनुकरणीय है। इसके साथ-साथ संस्थान में लागू वित्तीय प्रोत्साहन योजनाएं भी कार्मिकों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहित करने में सहायक है।

संस्थान में राजभाषा अधिनियमों, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु ससक्त जाँच बिंदु स्थापित है। संस्थान राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को निरंतर बढ़ाने हेतु कृत संकल्प है। पत्रिका को मूर्त रूप देने हेतु सहयोग के लिए संपादक मंडल सभी रचनाकारों को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता है।

हिंदी दिवस की मंगल कामनाओं सहित।

## राष्ट्रीय सुरक्षा: जन स्वास्थ्य की संकल्पना



**कर्नल गुरुराज गोपीनाथ पामिडि**  
(सेवानिवृत्त)  
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी  
भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

### परिचय

सुरक्षा, अपने सरल और व्यापक अर्थों में, खतरे का अभाव है। अब तक, हम भारत में, राष्ट्रीय सुरक्षा के दर्शन विज्ञान को केवल राष्ट्र की रक्षा से संबंधित देखने के आदी रहे हैं और इसमें आम तौर पर केवल राजनयिक, आर्थिक और सैन्य आयामों के पारंपरिक पहलू शामिल होते हैं। इससे सुरक्षा का क्या मतलब है, इस बारे में एक अत्यधिक स्थिर दृष्टिकोण पैदा हुआ है। यह हमेशा माना जाता था कि एक राष्ट्र चैन के साथ सो सकता है यदि उसकी सीमाएँ सुरक्षित हों। हालाँकि, आज लगभग प्रत्येक नागरिक मौजूदा महामारी की स्थिति के कारण असुरक्षित महसूस कर रहा है। इसलिए, सुरक्षा की पारंपरिक परिभाषा की पुनः जांच करने की आवश्यकता है।

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में सुरक्षा को किसी देश, भवन या व्यक्ति को हमले, खतरे आदि से बचाने में शामिल गतिविधियों के रूप में परिभाषित किया है। इसलिए, अपने सही अर्थों में, सुरक्षा कहीं अधिक व्यापक अवधारणा है और मानव सुरक्षा एक आंतरिक हिस्सा है। सुरक्षा की एक राज्य-केंद्रित, सैन्य रूप से उन्मुख, और बाहरी रूप से केंद्रित परिभाषा के

नुकसान ने अनजाने में सुरक्षा के एक कारक के रूप में स्वास्थ्य की उपेक्षा की है। इस महत्वपूर्ण पहलू की उपेक्षा करने वाली सरकारें देश में स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे की खराब स्थिति के एक बड़े पैमाने पर जिम्मेदार हैं।

### वर्तमान खतरा

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि नावेल सार्स-सी ओ वी-2 वायरस ने दुनिया भर में कहर बरपा रखा है। जबकि वायरस की प्रकृति और उत्पत्ति विषयक दावे प्रचुर मात्रा में हैं, संदेह लाजिमी है कि सार्स-सी ओ वी-2 वायरस जिसके कारण कोविड-19 का प्रकोप हुआ, वह चीन के वुहान में एक नियंत्रण प्रयोगशाला से पैदा हुआ होगा। निष्पक्ष होने के लिए, एक अनुगामी कथा है जो दावा करती है कि बीमारी पशुजन्य मूलक हो सकती है। यह भी एक दुखद तथ्य है कि सार्स-सी ओ वी-2 वायरस एक अच्छे जैविक हथियार के रूप में भी पूर्ण रूप से सक्षम है।

### जैविक हथियारों का इतिहास

जैविक हथियारों का उपयोग करने के प्रयास प्राचीन काल से हैं। इन घटनाओं का संक्षिप्त इतिहास निम्न तालिका में दिया गया है-

समय	घटना
600 ई. पू.	एथेंस के सोलन क्रिस्स की घेराबंदी के दौरान रेचक जड़ी बूटी हेलबोर का उपयोग करते हैं
1155	सम्राट बारब्रोसा ने इटली के टोर्टोना में पानी के कुओं को मानव शरीर से जहरीला किया
1346	टैटार सेनाओं ने काफ़ा, क्रीमिया प्रायद्वीप (अब फ़ोदोसिया, यूक्रेन) की शहर की दीवारों पर प्लेग पीड़ितों के शवों को प्रक्षेपित किया
1495	स्पेन के नेपल्स, इटली में अपने फ्रांसीसी दुश्मनों के लिए शराब के साथ कुछ रोगियों का खून मिलाया गया
1675	जर्मन और फ्रांसीसी सेना जहरीली गोलियों का उपयोग नहीं करने पर सहमत
1710	रूसी सैनिकों ने प्लेग पीड़ितों के मानव शरीर को स्वीडिश शहरों में प्रक्षेपित किया



1763	ब्रिटिश द्वारा अमेरिकन मूल-निवासियों को चेचक के रोगियों के कंबल वितरित किए गए
1797	मलेरिया फैलाने हेतु नेपोलियन ने इटली के मंटुआ के आसपास के मैदानी इलाकों में बाढ़ की स्थिति लाई गई
1863	अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान कन्फेडरेट सैनिकों को पीले बुखार और चेचक के रोगियों के कपड़े बेचे गए
प्रथम विश्व	युद्ध जर्मन और फ्रांसीसी एजेंट द्वारा ग्लैंडर्स और एंथ्रेक्स का उपयोग किया गया
द्वितीय विश्व युद्ध	जापान द्वारा प्लेग, एंथ्रेक्स और अन्य बीमारियों का उपयोग किया गया; कई अन्य देश जैविक हथियार कार्यक्रमों का प्रयोग और विकास करते हैं
1980-1988	इराक द्वारा फारस गल्फ युद्ध के दौरान ईरान और इराक के अंदर जातीय समूहों के खिलाफ मस्टर्ड गैस, सरीन और टैबून का उपयोग किया गया
1995	ओम शिनरिकयो द्वारा टोक्यो मेट्रो सब-वे सिस्टम में सरीन गैस प्रयुक्त की गई

### स्रोत: यूएस नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ

जो भी मामला हो, चाहे वह वुहान में एक शोध प्रयोगशाला से गलती निकला हो या अन्यथा, यह एक तथ्य है कि एक उचित संदेह से परे सबूत स्थापित करना एक बहुत ही दुर्गम प्रस्ताव है।

### नागरिकों के स्वास्थ्य को सुरक्षित करना

कोविड हाल के दिनों में सभी नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण खतरा बनकर उभरा है। प्रत्येक देश प्रभावित लोगों की पीड़ा को कम करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है और साथ ही बड़े पैमाने पर राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान द्वारा यह भी सुनिश्चित किया जा रहा है कि लोग इस महामारी से प्रभावित न हों। हालांकि, इसके बावजूद भी, कोई भी उस भयावह दूसरी लहर की भविष्यवाणी नहीं कर पाया, जिसने लाखों प्रभावित व्यक्तियों और परिवारों को अनकहा दुख व पीड़ा दी है। कोरोना वायरस के मामलों में वृद्धि की भविष्यवाणी करने के लिए गणितीय मॉडल पर काम करने वाले वैज्ञानिकों का एक समूह भी विनाशकारी दूसरी लहर के सटीक प्रक्षेप वक्र की भविष्यवाणी नहीं कर सका क्योंकि समय के साथ वायरस की गतिशीलता और इसकी संचरण क्षमता में काफी बदलाव आया।

कुछ स्वास्थ्य समस्याएं, विशेष रूप से संक्रामक रोगों का प्रकोप, मानव सुरक्षा के लिए खतरा हैं क्योंकि उनके परिणामस्वरूप बहुत अधिक मौतें हो सकती हैं और/या दुनिया भर में बहुत अधिक नुकसान हो सकता है। भारत जैसे विशाल राष्ट्र में, यह अनिवार्य है कि स्वास्थ्य सुरक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा के हिस्से के रूप में माना जाए, तभी इसे वह महत्व दिया जाएगा जिसका कि यह हकदार है। एक बार जब इसे एक सुरक्षा समस्या के रूप में लेबल कर दिया जाता है, तो हम अपने सीमित संसाधनों का एक हिस्सा इस कथित खतरे के विरुद्ध अपनी सुरक्षा हेतु समर्पित करने के लिए अधिक इच्छुक होंगे।

### संभावित खतरों का पूर्व ज्ञान सुनियोजित लाभ देता है

महामारी का जवाब स्वास्थ्य विभाग के पास है, फिर भी जोखिम मूल्यांकन, पहचान और यहां तक कि व्यापक डेटा खनन/मशीन सीखने की क्षमता जैसी कई तकनीकी क्षमताएं जो खुफिया एजेंसियों के पास अनुबंध ट्रेसिंग प्रयासों में सहायता कर सकती हैं।

आज भी, जबकि नॉवल कोरोनावायरस की उत्पत्ति की जांच वैज्ञानिकों, महामारी वैज्ञानिकों और वायरोलॉजिस्टों द्वारा की जाती है, तेजी से इस सत्य का पता लगाने हेतु खुफिया एजेंसियों पर छोड़ दिया जा रहा है। यूनाइटेड स्टेट्स नेशनल इंटेलिजेंस काउंसिल ने राष्ट्रीय सुरक्षा खतरे के रूप में वायरस महामारी की पहचान की थी और विडंबना यह है कि जनवरी 2020 में वर्तमान महामारी की शुरुआत में ही राष्ट्रीय खुफिया अनुमान प्रकाशित किया गया था और इस खतरे की चेतावनी भी दी गई थी। यहां तक कि वर्तमान

अमेरिकी राष्ट्रपति, जो बिडेन ने भी चीन में एक जैव प्रयोगशाला से वायरस की उत्पत्ति के बारे में बढ़ते विवाद के बीच, अमेरिका अमेरिकी खुफिया एजेंसियों को घातक कोविड -19 महामारी के उद्भव की जांच में अपने प्रयासों को दोगुना करने और 90 दिनों में वापस रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आदेश दिया है। यदि महामारी राष्ट्र की सुरक्षा एवं संरक्षा को प्रभावित करती है तो खुफिया ही इसका समाधान है।

## निष्कर्ष

क्षमता का निर्माण रातोंरात नहीं किया जा सकता है और निश्चित रूप से, यह महामारी के चरम के दौरान नहीं किया जा सकता है। क्षमताओं का निर्माण धीरे-धीरे और अथक प्रयास के साथ करना होगा। उत्कृष्ट उदाहरण नंदुरबार जिले का है। यह जिला अपने समृद्ध स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे के लिए जाना जाता है; ऑक्सीजन प्लांट, अस्पताल के बिस्तर, एक केंद्रीय नियंत्रण कक्ष और परीक्षण बढ़ाने हेतु एक योजना – सभी सक्रिय जिला कलेक्टर के नेतृत्व में दूसरी लहर की प्रत्याशा में स्थापित किए गए। यह सब उस जिले में है जो महाराष्ट्र के सबसे गरीब जिलों में से एक है। अब समय आ गया है कि देश में स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे की मांग और उपलब्धता के बीच भारी अंतर को तत्काल दूर किया जाए, जब हम विभिन्न विकल्पों पर काम कर रहे हैं जो तीसरी लहर की तैयारी में सहायता करेंगे। अनुमान है कि भारत में लगभग 6 लाख डॉक्टरों और 20 लाख नर्सों की कमी है। चूंकि हमारे पास जादुई रूप से कुछ हफ्ते, महीनों या वर्षों की अवधि में पर्याप्त डॉक्टर नहीं हो सकते हैं, इसलिए भारत को नैदानिक देखभाल में ऐसे क्षेत्रों की शीघ्रता से पहचान करने की आवश्यकता है जो विभिन्न योग्यताओं व अनुभव वाले स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को सौंपे जा सकते हैं। प्रत्येक जिले में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र होने चाहिए जो गंभीर रोगियों की पहचान करने और प्रारंभिक देखभाल प्रदान करने में सक्षम हों। इस महामारी ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है कि हमें स्वास्थ्य को एक महत्वपूर्ण सुरक्षा मुद्दे के रूप में लेने एवं प्राथमिक देखभाल के पुनर्गठन में तेजी लाने की आवश्यकता है।

## प्रबंधन शिक्षा पर पैनल परिचर्चा: कोविड महामारी की चुनौतियां



## पश्चाताप (संस्मरण)



**राजेश कुमार श्रीवास्तव**  
 राजभाषा अनुभाग

आज से तकरीबन अड़तीस वर्ष पहले की बात है मैं उत्तर पूर्व के प्रमुख नगर गुवाहाटी से मेरे पूर्व विभाग (भारतीय वायु सेना) के विभागीय कार्य के उपरांत दिल्ली-तिनसुकिया एक्सप्रेस द्वारा वापस लौट रहा था। वैसे तो रेल यात्रा के दौरान बहुत से अनुभव होते हैं किंतु यह अनुभव कुछ लग था। इसे मैं गृह पत्रिका 'ज्ञान शिखर' के माध्यम द्वारा आपसे साझा करना चाहूँगा।

मेरे ठीक सामने वाली शायिका पर एक वयोवृद्ध दंपति आसीन थे। देखने से वे 80-85 वर्ष के लग रहे थे। पूरे केश सफेद चमकदार.... चेहरे पर तेज़। इतनी आयु होने के बावजूद भी आँखों पर नज़र के ऐनक नहीं। दोनों लोग अपना दैनिक कार्य करने में स्वयं सक्षम थे। मैं उन महाशय से बरबस ही पूछ बैठा दादा जी कहाँ जा रहे हैं ? उन्होंने जवाब दिया दूर, बहुत दूर..... बेटा शांति और आध्यात्म करते हुए हम एक तीर्थ से दूसरे तीर्थ यूँ ही घूमते रहते हैं। अभी माँ कामाख्या के दर्शन कर केदारनाथ की ओर जाने की योजना है। जीवन को सार्थक और सफल करने की कोशिश जारी है। जब तक जीना तब तक सीना ..... मुझे लगा कि मैंने अपने प्रश्न से उनके हृदय की वीणा को झंकृत

कर दिया था, फिर मैंने कहा आपका इतना प्रभावशाली व्यक्तित्व दादी के रूप में हर कदम पर आपका साथ निभाने वाली आपको जीवन-संगिनी ईश्वर की कृपा से प्राप्त हैं, साथ ही चेहरे पर न कोई तनाव, प्रतीत होता है..... लगता है कि आपके बच्चे भी सुव्यवस्थित हो चुके होंगे फिर तो जीवन को सार्थक और सफल बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता। एक ही सांस में सत्यता से अनभिज्ञ मैं अपनी बात कह गया। इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि अब इस दुनिया में मैं और मेरी पत्नी ही हैं। मेरा मन किसी घोर पारिवारिक त्रासदी की बात सोचने लगा, मानों मेरी जिज्ञासा को भाँप गए हों वे बोले कि सुनना चाहोगे मेरी कहानी ? प्रत्युत्तर में मैंने अपनी मौन सहमति उन्हें दे दी। सन् 1949-50 की बात है, मैं पुलिस विभाग में दरोगा था मैं सम्पन्न घर से था... बहुत रौब था। उस समय मेरे पास मोटर साइकिल होती थी। जहाँ से भी गुजरता था सन्नाटा सा पसर जाता था। एक रात की बात है कि मैं देर रात ड्यूटी से वापस लौट रहा था हाईवे पर एक व्यक्ति जो लहुलुहान एवम गम्भीर अवस्था में घायल था लगता किसी वाहन की चपेट में आ गया था या कोई और ही वजह रही हो लेकिन अब या तब किसी भी क्षण उसकी जान जा सकती थी मैं किं कर्तव्य विमूढ़ हो गया था आस पास नज़रें दौड़ाई शायद कहीं से कोई मदद मिले तो कुछ प्रयास किया जाए। तभी मेरी नज़र बगल में पड़े थैले पर पड़ी, जो कि नोटों से भरा हुआ था .... जिस में तकरीबन बीस हज़ार रुपये के नोट थे, मेरा ईमान डोल गया मैंने नोट उठाए और चलता बना। उस समय एक रुपये की भी कीमत बहुत ज्यादा होती थी और मुझे मानों खज़ाना मिल गया था, मैं उस घटना को भूल गया था पर मेरी सम्पन्नता की प्रस्थिति में क्षणिक किन्तु प्रभावशाली वृद्धि हो चुकी थी।

ठीक दस महीने के बाद मेरी धर्मपत्नी को पुत्र की प्राप्ति हुई। बहुत खुशियाँ मनाई गईं। लेकिन जन्म से ही बालक स्वस्थ एवं सामान्य नहीं था। मैंने दिल्ली के सबसे बड़े अस्पताल में उसका इलाज करवाया पर डाक्टरों ने उसे मद्रास, वेलूर ले जाने की बात कही, ऐसा करते करते एक वर्ष बीत गया कहीं से कोई फायदा नहीं हो रहा था, मेरा पुलिस की नौकरी से भी मोह भंग हो गया था। काफी पैसा खर्च हो गया था फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी थी। अब मैं उस बच्चे को इलाज के लिए विदेश ले जाने की सोच रहा था। एक दिन मैं अस्पताल के शिशु रोग वार्ड में बच्चे के पास रोज की भांति बैठा निहार रहा था लेकिन एक चमत्कार या अजीब वाक्या घटित हुआ.... एक वर्ष का बालक बोल पड़ा क्यों ? बस इतने में ही परेशान हो गए ? याद करो उस रात का वक्त .... जब मैं घायल पड़ा था और तुम टाल-मटोली कर रहे थे मैं तुम्हारा बेटा नहीं..... मैं तो बस अपना बदला लेने आया था मेरा काम पूरा हुआ.... मैं अब जा रहा हूँ। इस के बाद से तथा कथित मेरे बच्चे की आँखें हमेशा के लिए बन्द हो गईं।

कहानी को सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए, और मैं समझ गया था कि इसी घटना से प्रभावित होकर इस दम्पति ने शायद वैराग्य धारण कर लिया है। कहानी कहकर दादाजी तो सो गए थे लेकिन मैं पूरी रात सो नहीं सका था, इसी उधेड़-बुन में कि क्या ये सच्ची घटना है या मनगढ़ंत। चाहे जो भी हो उस व्यक्ति की स्वीकारोक्ति, सत्य वचन, एवं सच्चे पश्चाताप की मैं मन ही मन भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा था। उनके इसी पश्चाताप और अनुशासित जीवन का ही शायद परिणाम था कि दीर्घ-जीवी दम्पति इतनी उम्र में भी इतने तेजोमय एवं आत्मनिर्भर थे साथ ही उनमें आत्मविश्वास की किंचित कमी न थी।

## कहानी



**रिमिशा जैन**  
लेखा अधिकारी

सुबह ही माँ का फ़ोन आ गया, 'कुमुद, मैंने तेरे लिए एक रिश्ता पसंद किया है। बता किस दिन उनसे मिलने चल सकती है ?' 'नहीं माँ, मुझे नहीं करनी शादी। तुम मेरे लिए लड़के देखना बंद कर दो। प्लीज।' '35 की तो हो गई, बेटा, तेरी वकालत की प्रैक्टिस भी अच्छी चल रही है, अब नहीं करेगी तो कब करेगी ?' जल्दी से बात ख़त्म करके कुमुद अपने ऑफिस की तरफ चलने लगी। मन में सोच रही थी- 'माँ भी न, सुबह-सुबह मूड़ खराब कर देती है।' ऑफिस में घुसते ही अपना काला कोट उतार कर कुर्सी के पीछे टांगते हुए सामने कुर्सी पर बैठी अपनी क्लाइंट को देख रही थी। सुलोचना नाम था, उम्र 55 के लगभग होगी। वो बोल रही थी, 'पिछले महीने मेरे पति की मृत्यु हो गयी। हम पर एक औरत ने दावा किया है कि उसके मेरे पति के साथ सम्बन्ध थे, और उनका एक पांच साल का बेटा भी है। अब वो मुझसे पैसे मांग रही है।' कुमुद उसकी तरफ गौर से देख रही थी। कुमुद ने पूछा, 'क्या आपको इस अफेयर का पता था ?' 'नहीं।' 'वो रोज़ घर पर ही रहते थे ?' 'उनकी शुरु से ही टूरिंग की जॉब थी, महीने में बीस दिन बाहर ही रहते थे।'

थोड़ी देर कमरे में चुप्पी छा गई। फिर सुलोचना बोलने लगी, 'हम कॉलेज से साथ है। थे। पहले दोस्त थे, बहुत अच्छे दोस्त। फिर शादी की। मुझे लगता था कि हम साथी हैं। पर अब लगता है जैसे मैं उन्हें बिलकुल नहीं जानती थी। इतनी बेवकूफ कैसे हो सकती थी मैं ? पर मेरे और बच्चों की तरफ उनके प्यार में कभी कमी भी तो नहीं आई।' थोड़ा रुककर सुलोचना बोली, 'मैं बच्चों को नहीं बताना चाहती, वो भी मेरी तरह ज़िन्दगी भर अपने पिता को धोखेबाज़ समझेंगे। मैं ये नहीं चाहती।' उसके चेहरे पर दुःख की रेखाएं साफ दिखाई दे रही थी। कुमुद ने पूछा, 'आप जानती हैं उसे ? क्या नाम है उसका ?' 'नहीं, जानती नहीं। नाम प्रतिमा है। उनके ऑफिस में काम करती है।' 'आपके पति की कोई चिठ्ठी या कागज़ या विल जिस में उस औरत का नाम हो ?' सुलोचना बोली, 'नहीं। उन्होंने कभी विल नहीं बनाया।' कहते कहते उसकी आंखें भर गईं। कुमुद को केस समझ आ गया था, पर उसे लड़ेगी कैसे ? सुलोचना का पक्ष कैसे समझ आएगा कुमुद को ? वो खुद उस प्रतिमा की जगह जो खड़ी थी। बच्चा नहीं था, पर पिछले पांच साल से रवि के साथ उसका भी तो वही सम्बन्ध था। हे कृष्णा, ये क्या लीला रच रहे हो आप ? राधा को रुक्मिणी की वेदना क्यों दिखा रहे हो ?

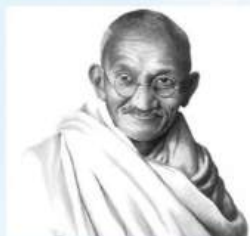
कुमुद सुलोचना को बोल रही थी, 'देखिये केस बिलकुल साफ है। अगर उसके पास कोई विल नहीं है, और लीगल स्टेटस भी नहीं है, तो उसका केस काफी कमज़ोर है। आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। हमारा पक्ष बहुत मज़बूत है। मैं प्रतिमा के वकील से कल मिलकर आपको आगे की बात बताती हूँ।' अगले दिन अपने वकील के साथ एक 30-31 साल की सीधी सादी प्रतिमा, सफ़ेद लखनवी सूट पहने, सर झुकाये बैठी थी। कुमुद ने सोचा 'मुझ जैसी तो बिलकुल नहीं है।' फिर अपने इस ख्याल पर खुद ही हैरान हो गई। हालात एक से होने पर शकलें थोड़ी मिलने लगती हैं!

कुमुद ने उससे कहा, 'देखिये आपके पास कोई कागज़ात नहीं है, कोई भी पुख्ता सबूत नहीं है। चंद फोटो और आपकी जुबां - बस, कोर्ट सिर्फ इनसे आपकी कहानी को सच नहीं मानेगी। बेहतर होगा अगर आउट-ऑफ-कोर्ट सेटलमेंट हो जाये, सभी का खर्चा और वक़्त दोनों ही बचेंगे।' उसका वकील बोल रहा था, 'सारा ऑफिस गवाह है इन दोनों के रिश्ते का। उनके हाथ की लिखी चिट्ठियां भी हैं। हैंडराइटिंग एक्सपर्ट से जांच करा लेंगे, उसमें उन्होंने साफ लिखा है कि प्रतिमा उनकी प्रेयसी हैं और दोनों का एक बेटा भी है।' अपनी गोद में रखे अपने हाथों को चुपचाप देखती प्रतिमा ने नज़रें उठाकर देखा और बोली, 'डीएनए टेस्ट करा लीजिए मेरे बेटे का उससे बड़ा सबूत तो नहीं चाहिए कोर्ट को ?' 'देखिए, उनकी पत्नी आपको दो लाख रुपए देने को तैयार है। पर इससे ज्यादा नहीं। बदले में आपको कागज़ साइन करने पड़ेंगे कि इसके बाद आपका या आपके बेटे का उनसे कोई वास्ता नहीं रहेगा।' प्रतिमा को लगा जैसे किसी ने उसके मुंह पर तमाचा मार दिया है। 'आपको लगता है मैं चंद पैसों के लिए ये केस लड़ रही हूँ। इतनी तो उनकी एक महीने की तनख्वाह थी। मुझे मेरे बेटे का जायज़ हक चाहिए। मैं उसे किसी शर्मनाक गलती की तरह ढकना नहीं चाहती। हमारा रिश्ता चाहे कानूनी न हो, पर थे तो वो उसके पिता। उस औरत से वास्ता नहीं रखूंगी, पर उन्हें ये तो मानना ही पड़ेगा कि ये भी उसी बाप का

बेटा है जिससे उसके बच्चे हैं।' कागज़ समेट कर उठते हुए कुमुद ने कहा, 'आप सोचकर बता दीजिए। मेरा मुवकिल इससे ज़्यादा नहीं देगा।' प्रतिमा बोली, 'मुझे सोचने की ज़रूरत नहीं है। मुझे ये ऑफर मंज़ूर नहीं है।' मन में कुमुद सोच रही थी 'ठीक ही तो है। पर मैं अपने क्लाइंट से ज़्यादा ओपपोसिंग पार्टी के लिए हमदर्दी क्यों महसूस कर रही हूँ?' रातभर कुमुद करवटें बदलती रही, पर उसे नींद नहीं आई। याद कर रही थी कैसे उसके माता-पिता ने पूरा विश्वास करके उसे अपनी पढ़ाई और फिर प्रैक्टिस के लिए मुंबई भेज दिया था। उन्हें नहीं पता था कि कुमुद के पिछले पांच साल से रवि के साथ सम्बन्ध थे, और रवि उसे कहता था कि जल्द ही वो अपनी पत्नी को तलाक दे देगा और कुमुद से शादी करेगा। कुमुद ने उसकी पत्नी और बच्चों को कभी नहीं देखा था। पर अब उनके बारे में सोच रही थी। इस केस ने उसे झकझोर दिया था। पत्नी का दुःख उसे साफ़ दिख रहा था। जिस पति के साथ उसने इतने साल बिताये थे, जिसके बच्चों की वो माँ थी, जिसका उसकी आँखों ने बरसों इंतज़ार किया था, उसका दिल आज कितना दुखी था ये सोचकर कि वो तो उस आदमी को पूरी तरह जानती भी नहीं थी। पर अभी भी अपना भरोसा टूटने से ज़्यादा उसे इस बात की परवाह थी कि वो आदमी अपने बच्चों की नज़रों में न गिरे। वो उसी आदमी के नाजायज़ रिश्ते को अपने बच्चों से छुपाना चाहती थी। जिसने जीते जी उसकी भावनाओं की कदर नहीं की थी, वो मरने के बाद भी उसका नाम नहीं ख़राब होने देना चाहती थी। प्रतिमा के वकील का फोन आया कि वो मिलना चाहती थी। जब कुमुद पहुंची, तो वकील ने कहा, 'हमें आपका ऑफर मंज़ूर नहीं है।' प्रतिमा नज़रें झुकाये चुप बैठी थी। कुमुद ने उससे पूछा, 'क्या हुआ?' प्रतिमा बोली, 'मैं ये डील नहीं चाहती।' 'तो फिर क्या चाहती हो?' 'पता नहीं।' उसके वकील ने बीच में बोलने की कोशिश की, तो कुमुद ने हाथ उठाकर उसे चुप रहने का इशारा किया और ऊंची आवाज़ में प्रतिमा से बोली 'क्या चाहती हो फिर?' पता नहीं, कहा न,' प्रतिमा ने भी ऊंची आवाज़ में जवाब दिया। उसका थका हुआ उदास चेहरा देखकर कुमुद को पता नहीं क्या हुआ। वो खुद को रोक नहीं पायी। आवाज़ और ऊंची करके बोली, 'मैं बताती हूँ तुम्हें क्या चाहिए। तुम्हें उनके साथ कुछ साल और चाहिए, तुम्हें अपने नाम के आगे उनके सरनेम का हक चाहिए। तुम्हें अपने बच्चे के हर बर्थडे पर उन्हें वहाँ साथ खड़ा देखना है। तुम्हें अपने ऑफिस, अपनी रिश्तेदारी में उनके साथ बिना डरे, बिना किसी अपराध बोध के हक और इज़्ज़त के साथ उनके साथ खड़े होना है। तुम्हें अपने बेटे के लिए उसके बाप का जायज़ हक चाहिए, उस हिस्से में से हिस्सा चाहिए, जो वो उसे देकर नहीं गए।' बोलते- बोलते कुमुद का गला भर आया और प्रतिमा भी फूट-फूटकर रोने लगी।

वकील चुपचाप देख रहा था। यहाँ केस नहीं, कुछ और ही चल रहा था। कुमुद की आँखें भी भरी हुई थी। वो एक वकील की तरह नहीं, एक औरत की तरह बोल रही थी। टेबल के उस पार जाकर प्रतिमा की पास वाली कुर्सी पर बैठकर उसने प्रतिमा का हाथ अपने हाथों में ले लिया, और धीमी आवाज़ में बोली, 'मैं तुम्हें कुछ एक लाख तो दिलवा सकती हूँ, पर जो तुम्हें चाहिए वो अब तुम्हें कोई नहीं दिलवा सकता।' उसे टिश्यू देकर कुमुद ने दूसरे टिश्यू से अपनी आंखें पोंछी, फिर उसे पानी का गिलास दिया। सामने खड़े वकील से बोली, 'आपकी क्लाइंट की जो डिमांड है, उसे तैयार कर लीजिए। मुझसे जितना हो सकेगा, मैं इन्हें दिलवाने की कोशिश करूंगी।' बहुत थका हुआ महसूस कर रही थी आज कुमुद। इतने केस लड़े थे, पर इतनी इमोशनल तो कभी नहीं हुई थी। आज क्या हो गया था उसे? कहीं प्रतिमा के लाचार ऑसूओं में उसे अपना भविष्य तो नहीं दिख रहा था? जब सुलोचना को पता चला कि प्रतिमा दो लाख में नहीं मान रही, उसे और पैसे चाहिए तो बोली, 'तो सिर्फ पैसे से ही तो प्यार था? उनसे थोड़ी था। मैं एक पैसा भी नहीं दूंगी उसे।' कुमुद बोली, 'ऐसा नहीं है। वो भी बहुत प्यार करती है उनसे। आपके पति भी उतने ही गुनहगार है जितनी वो। दूसरी औरत की कोई पहचान नहीं होती। वो अपने लिए नहीं, अपने बेटे के लिए, आपके पति के बेटे के लिए, हक मांग रही है। जैसे आप अपने बच्चों को विरासत में उनके पिता की अच्छी छवि देना चाहती हैं, वो अपने बेटे को उसके पिता का कुछ हिस्सा देना चाहती है। आगे आपकी मर्ज़ी है। कानूनी तौर पर आपका केस स्ट्रांग है, पर अगर इंसानी तौर पर आप उसे कुछ देना चाहती है, अपने पति की ज़िम्मेदारी को कुछ चुकता करना चाहती है, तो ठीक रहेगा। मैं आपकी वकील होने के नाते नहीं, एक औरत होने के नाते आपको ये राय दे रही हूँ। आगे जो आप चाहती हैं, वही होगा।' सुलोचना बोली, 'इतना आसान नहीं है बहुत उलझा हुआ है सब कुछ।' 'जो रिश्ता ही उलझा हुआ है, तो उसके साथ तो उलझने ही होंगी।' सुलोचना चुपचाप उसकी बातें सुन रही थी। कुछ देर सोचती रही, फिर बोली, 'मैं उससे मिलना चाहती हूँ। एक बार।' कुमुद के ऑफिस में सुलोचना प्रतिमा का इंतज़ार कर रही थी, कह रही थी, 'कभी नहीं सोचा था मेरे साथ ऐसा कुछ होगा। कॉलेज से ही पता था किससे शादी करनी है, फिर शादी के बाद भी पत्नी और माँ बनकर ही रही। पर आज? आज वो सबकुछ झूठ लगता है। अपना जीवन, अपना पति, अपनी शादी सब एक मज़ाक लगता है। सारी उम्र एक अच्छी पत्नी के सारे

फ़र्ज़ निभाए हैं मैंने। खासकर साफ़-सफ़ाई का काम मेरा ही रहा है। उनके कपड़ों में, घर में, यहां तक कि रिश्तों में भी। वो बस कूड़ा फैलाकर निकल जाते थे, कभी हरकतों से, कभी लफ़्ज़ों से। मेरा काम होता था उनके पीछे से कभी सुलह का, कभी सफ़ाई का।' कुमुद सुलोचना के पास आकर बैठ गई, 'उनसे ये भूल हुई थी, उनकी गलती थी। अपने दिल पर काबू नहीं रहा, इसलिए ये रिश्ता बना बैठे।' सुलोचना अब भावुक हो गई थी, 'दिल? दिल की भी तो एक मर्यादा होनी चाहिए न ? जिस रिश्ते की शुरुआत ही किसी के आँसूओं से हो, वो खुशी कैसे दे सकता है? जब रास्ता ही गलत है तो उसपे चलकर मंज़िल कैसे सही मिल सकती है?' कुमुद बोली, 'एक वकील नहीं, पर एक औरत होने के नाते कहूँगी कि आप उन्हें माफ़ कर दे। आप उनकी ब्याहता हैं, और हमेशा रहेंगी। आपके नाम के आगे उनका नाम रहेगा। समाज आपके बच्चों को ही उनका कानूनी वारिस मानेगा। आपका ओहदा बहुत ऊँचा है। उसी ऊँची सोच से उस बच्चे के बारे में सोचिए जिसकी इस सबमें कोई गलती नहीं है।' सुलोचना कोई जवाब देती इससे पहले ही प्रतिमा और उसके वकील कमरे में आ गए। टेबल की एक तरफ सुलोचना और कुमुद बैठे थे और दूसरी तरफ प्रतिमा और उसका वकील। प्रतिमा सिर झुकाये बैठी थी और सुलोचना उसे बहुत गौर से देख रही थी। शायद समझने की कोशिश कर रही थी कि कैसे दिखती थी वो औरत जिसने उस आदमी का प्यार बाँटने की कोशिश की थी जिस पर उसका, सिर्फ उसका, हक़ था? किसी और के पति से रिश्ता बनाने वाली आज के ज़माने की राधा ने आखिर क्या सोचकर इस रिश्ते को कायम किया होगा? पर सामने बैठी, अपने से लगभग 20 साल छोटी उस औरत के उदास चेहरे और आँसू से भरी हुई आँखों से उसे कोई जवाब नहीं मिल रहा था। सब चुप बैठे थे। फिर कुमुद ने वकील से पूछा, 'आपकी मुवक्किल ने क्या सोचा है?' वकील के बोलने से पहले ही सुलोचना बोली, 'पहले मैं इन्हें ये बताना चाहती हूँ कि मैंने क्या सोचा है।' सब सकपका गए। कुमुद को लगने लगा शायद दोनों को एक कमरे में आमने-सामने बिठाकर उससे कोई गलती हो गई थी। अगर यहाँ लड़ाई हो गई, तो बात बिगड़ जाने की सम्भावना ज़्यादा थी और फिर ऐसे पेचीदा रिश्तों के मसलों भला कोर्ट-कचहरी में। कहाँ सुलझ सकते थे? सुलोचना कह रही थी, 'तुम्हारा उनसे जो भी रिश्ता था, उस पर मैं कुछ नहीं कहना चाहती। लेकिन तुम्हारा बेटा भी है। बड़ों की गलतियों की सज़ा बच्चों को नहीं मिलनी चाहिए। मैं तुम्हारे बेटे के नाम से एक ट्रस्ट फंड बनाऊँगी, जिसमें इनके प्रोविडेंट फंड का आधा पैसा डाल दूँगी। जिसे सिर्फ उसकी पढ़ाई के लिए काम में लिया जाएगा, और जिसका बाकी पैसा उसे 21 साल का होने पर मिलेगा। अगर इससे पहले हम दोनों को कुछ हो जाता है, तो मेरा बड़ा बेटा उसका लीगल गार्डियन बनेगा। मैं बच्चों से इस बारे में बातकर लूँगी। वो उसकी क्या नाम है बच्चे का?' प्रतिमा ने धीरे से जवाब दिया, 'जतिना।' सुलोचना बोली, 'मेरे बच्चे जतिन की असलियत को नहीं नकारेंगे।' कमरे में सन्नाटा था, किसी को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। सिर्फ प्रतिमा की सुबकियों की आवाज़ आ रही थी। कुमुद और वकील को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहें। सुलोचना ने कुमुद की तरफ देख कर कहा, 'अगर इन्हें ये डील मंज़ूर है तो कागज़ तैयार करा दीजिए। मैं उन पर साइन कर दूँगी।' कहकर सुलोचना चली गई। कुमुद ने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। ये कैसी पत्नी थी? जिस औरत को वो अपना अपराधी मानती थी, उसे उसकी मांग से कहीं ज़्यादा पैसे बिना मांगे ही दे रही थी। पत्नी धर्म की ज़िम्मेवारी का ये एक अनोखा ही रूप था! दोनों के जाने के बाद कुमुद बहुत देर तक ख्यालों में खोयी रही। सोच रही थी अपनी ज़िन्दगी और रवि के और अपने रिश्ते के बारे में। अवैध रिश्ते के बारे में। आखिर समाज और कानून के नियम बहुत ज़रूरी होते हैं। फिर दिल चाहे इन नियमों को माने या नहीं। दिल पर अपना ही तो दिल है। और मर्यादा तो दिल को भी माननी चाहिए। जिस रिश्ते की शुरुआत ही किसी के आँसूओं से हो, वो खुशी कैसे दे सकता है? जब रास्ता ही गलत है, तो उसपे चलकर मंज़िल कैसे सही मिल सकती है? रवि से रिश्ता ख़त्म करने का समय आ गया था। कुमुद ने फैसला कर लिया। फ़ोन मिलाया, 'माँ, मैं घर आ रही हूँ। आप कौन सा लड़का पसंद करके आई है मेरे लिए? बताइये कब मिलना है?'



हृदय की कोई भाषा नहीं है,  
हृदय-हृदय से बातचीत  
करता है और हिन्दी हृदय की भाषा है।

महात्मा गाँधी

## करो ना करो - कोरोना से लड़ता भारत



सुश्री भव्या मिश्रा  
अकादमिक सहयोगी

तुम कुछ करो ना करो,  
घर बैठो और संवाद करो,  
जीवन की इस आपाधापी में,  
क्या खोया क्या पाया विचार करो 11111

सदुपयोग करो ना करो,  
प्रकृति का सम्मान करो,  
शुद्ध अशुद्ध की इस नगरी में,  
कुछ पल का आराम करो 11211

मेरा कहा करो ना करो,  
अकेलेपन का आकलन करो,  
स्वाद भोग की इस कल्पना में,  
तुम जाग्रत आत्मबल साध्य करो 11311

स्वयं को माफ करो ना करो,  
मनुज अपनी पशुता पर शर्म करो,  
जीत लो जब इस महामारी को,  
फिर तुम कुछ करो ना करो,  
इस प्रकृति पर करुणा करो 11411

## जीवन है अनमोल...



श्याम राव  
सामान्य कर्तव्य सहायक  
छात्रावास विभाग

जीवन है अनमोल करो ना इसका मोल,  
पल-पल बिता जाए हर क्षण,  
जी लो इसका हर पल-हर क्षण।

हर पल घटती जाए ज़िंदगी,  
ना जाने किस ओर जाए ज़िंदगी।

बनो किसी के प्रेरणा दायक,  
करके कुछ ऐसा काम लायक।

कर जाओ कुछ काम ऐसा,  
रहे दुआओं में नाम ऐसा।

जी ना सको गर तुम खुद के लिए,  
जी लो तुम किसी ओर के लिए।

दिया विधाता ने है जन्म तुमको,  
करो ना इसका अपमान,  
मात-पिता की सेवा करके बनो उनका अभिमान।

हर पल-हर क्षण यही सोच करूँ कहीं से शुरुआत,  
जी लो हर पल-हर क्षण यह मान कर,  
कल नहीं आता कुछ भी जान कर।

## वक्त



श्रीमती गिरिजा कुमार  
पत्नी: श्री प्रेमजी कुमार

बंद पिंजरे पर गौर किया तो जाना,  
उसमें न केवल बंद होती है साँसे,  
पर बंद होता है, ऊँची उड़ान का सपना,  
बंद होती है हसरतें, कि मिले कोई अपना,  
पिंजरे के अंदर दिखता है एक जीव,  
पर जो नहीं दिखती है, वह है  
मुक्ति की अनंत आशाएँ,  
मन का माना हुआ पाने की इच्छाएँ,  
देख सकती है आँखें, ऊचाईयाँ  
पर पाना चाहती है यथार्थ में उन्हें,  
देह तो हैं पिंजरे में कैद,  
पर मन तो चाहता है, जाना सागर के पार,  
स्वच्छंद, उन्मत्त, असीम और अपार,  
बंद पिंजरे की व्यथा तो दिखती है सबको,  
पर उन से अधिक डरावने होते हैं खुले पिंजरे,  
जिनमें भरी होती, कैद किये जाने की सशक्त कामनाएँ,  
जिनमें भरी होती है इच्छाओं की भूख,  
पर आज नियति ने खेला है खेल कुछ उल्टा,  
पिंजरे के अंदर का परिंदा हुआ आज़ाद,  
उड़ रहा उन्मुख, नाप रहा है अम्बर को  
बेजुबानो को कैद करने वाला खुदगर्ज,  
आज, अपने ही घर के पिंजरे में कैद हुआ  
वक्त ने आज बदल दी तस्वीर,  
अजादी को खोकर कोस रहे अपनी तकदीर  
अब उठो, जागो और पिंजरे को तोड़ो  
अपनों और गैरों से मुँह मत मोड़ो  
बचालो यह सुंदर संसार, कहीं जाएँ ना सब कुछ हार  
जागो और भगाओ डर, बचालो अपना।

## क्या वो जिंदगी कहलाती है... ?



अक्षिता श्रीवास्तव  
पुत्री: श्री राजेश श्रीवास्तव

आज इन चार दीवारों में जीने की आदत जो बनायी,  
ज़िंदगी मुझे जरा थमी-थमी नजर आई!  
हर ओर बूँदा पर मिली नहीं, मुझे खुद की भी परछाई,  
तब जाकर लगा, मैंने खुद, खुद से हैं, दूरियां ये बढ़ाई!  
जो लगा मुझे, कुछ सही नहीं है,  
सर पर आसमान, पैरों तले ज़मीन नहीं है।  
जैसे हाथों से कुछ छूटा जा रहा है,  
जैसे बेचैन दिल भी, खुद से धोखे खा रहा है।  
ये कैसी जिंदगी में जीने जा रही थी,  
क्यों, अकेले में भी.. खुद को बूँद नहीं पा रही थी।  
दोस्तों और काम में इस कदर उलझ गयी थी,  
खुद को पाने की चाह में, खुद से झुलस गयी थी।  
हुआ ये एहसास काफी समय बाद,  
लगा फिर मुझे, अब भी बदल सकते हैं हालात.  
अरे ! जिंदगी की इतनी कीमत तो अदा करो,  
कि मिली है जिंदगी, तो हक़ से अता करो।  
कि जिंदगी तो, हर पल में जी जाती है,  
जो न जी जिंदगी तुमने, तो क्या वो जिंदगी कहलाती है ?





**बच्चों के मुख से...**
**मौसम कैलेन्डर**

**अवनीश कुमार**

पुत्र: श्री प्रेमजी कुमार

ठंडा मौसम बर्फ गिरी, लो आ गया जनवरी  
 दिन छोटे और रात बड़ी, देखो फरवरी है खड़ी,  
 रंगों का आया मौसम, महुआ से महका है मार्च  
 गाँव गली तपते दिन रैन, आग लगाता है अप्रैल,  
 गन्ना, आम, तरबूज और लस्सी देखो आ गई मई,  
 तेज लू से अब नहीं सुकून, जान बचालो, आया जून,  
 बरखा लेकर आई है, कितनी सुन्दर जुलाई,  
 फहराएँ तिरंगा मस्त, आया झूले लिए अगस्त,  
 इंद्रधनुष है अंबर में, हरी धरती सितम्बर में।  
 पेड़ों ने पत्ते झाड़े, अक्टूबर के आड़े,  
 गई दिवाली ठंड आई, साथ नवम्बर को लाई  
 गरम चाय है अब भाया, माह दिसम्बर का आया।  
 यह तो था पहले का क्रम, अब देखें नया पाठ्यक्रम  
 कोहरे भरा जनवरी देख, प्रदूषण का नतीजा एक,  
 माह फरवरी में बारिश, फसलों को करती खारिज  
 ठंडा रहा मार्च महीना, सूरज ना बहा सका पसीना  
 अप्रैल में थी फसल खड़ी, तबाही मचा गए टिड्डी,  
 मई माह में तपते है, घर में माला जपते है।  
 जून खड़ा जल प्रलय लिए, तूफानों से लोहा लिए,  
 सूखा बीता माह जुलाई, तकते नभ ना बारिश आई  
 बादलों ने घेरा अगस्त, किसान पड़े हुए हैं पस्त,  
 बरसा पानी अंबर में, भीगे गणपति सितम्बर में,  
 गर्मी दिखे अब मौसम में, देख सितम अक्टूबर में,  
 दशहरे में भीगा रावण, दीए बुझे नवम्बर में,  
 देखो चक्रवाती तूफान, आ बैठा है दिसम्बर में  
 स्वेटर संग ताने छतरी, बारिश में भीगा जनवरी,  
 यह कैसा गोलमाल है, हर मौसम तंग हाल है।  
 रुको जरा देखो सोचो, कारण इन सबका खोजो,  
 अपने अंदर को झाँको, मौसम को कम मत आँको  
 गया समय अब जाओ जाग, मत लगाओ अपने ही घर में आग  
 पशु-पक्षी का रखो ख्याल, पेड़ लगाओ तुम हर साल  
 रखो प्रकृति का तुम ध्यान, जागरुकता का बाँटो ज्ञान,  
 तुम देखो या ना देखो, पर बदल रहा मौसम कैलेन्डर

**खेलों का जादू....**

**शुभ्रा कुमारी**

कक्षा 8वीं

खेलों का है अदभुत जादू,  
 जीवन को यह राह दिखाता।  
 मिलकर रहना है सिखाता,  
 इससे बनता जीवन संयमित,  
 हृष्टपुष्ट एवं आनंदित।  
 खेलों के कुछ कमाल सुनाऊँ।  
 क्रिकेट खेल हम होते अनुभूत,  
 फुटबॉल खेल से बनते तंदस्वस्त।  
 बास्केटबॉल खेल से होते एकाग्रचित,  
 बालिबॉल खेल से बनते मजबूत।  
 राष्ट्रीय खेल हॉकी है, हम सब का प्यारा,  
 टेनिस भी है, सबको भाता।  
 सॉकर लगता सबको व्यास,  
 बेसबॉल भी सबका दुलारा।  
 बैडमिंटन भी है दिलचस्पी वाला,  
 सदा सिखाता ध्यान लगाना।  
 कबड्डी में दिखता जोश सभी का,  
 फुर्तीलापन भरमाता इसका।  
 ये सब खेल है मैदानों के,  
 घर में भी खेले जाने वाले खेल अनेक,  
 कैरम, लूडो, चेस, शतरंज खेल है,  
 मन में भरता अदभुत उत्साह उमंग।  
 खेलो तुम भी कोई खेल,  
 सदा सिखाते करना मेल।  
 जीवन मूल्य सिखाते खेल,  
 दुनिया में पहचान दिलाते खेल।  
 आओ खेले हम भी कोई खेल।



शुभा कुमारी

## समस्या का समाधान



श्रीमती कीर्ति श्रीवास

हमने रामायण कई बार पढ़ा, सुना, या टीवी में देखा होगा। परन्तु क्या आप जानते हैं कि हनुमान जी ने एक हाथ में कैसे पर्वत उठाया था और यह हमें किस ओर इंगित करता है? आप भी सोचने पर मजबूर हो जायेंगे ना। मैंने भी बहुत सोचा और अंत में इस ओर मेरा ध्यान गया। जब मैंने मुरली सुनी तब मुझे ज्ञात हुआ कि समस्या चाहे जितनी भी बड़ी क्यों न हो उसे हमें एक गेंद की तरह समझना चाहिए न कि पर्वत की तरह। हनुमानजी ने भी उस पर्वत रूपी समस्या को एक गेंद की तरह एक हाथ से उठा लिया। मेरा मानना है कि जिस प्रकार हनुमानजी को उनकी शक्तियों को याद दिलानी पड़ती थी उसी तरह कई बार हमें भी परमपिता (बाबाजी) हमारी शक्ति को याद दिलाते हैं कि हमें सच्चा कर्म करना चाहिए। हमें फल मिलता है और बाद में वह फल दूसरों को मिलता है। बीती बातों को भूल जाना चाहिए। जैसे नदी हमेशा बहती रहती है और यह उसका कर्म है कि पानी को बहाते रहे। अगर नदी में ज्यादा पानी हो जाता है तो वह उसे बाढ़ के रूप में बहा देती है। परन्तु उसे ज्यादा जगह मिले तो शांति से बहती है। उसी तरह हमारी समस्या भी है। जब ज्यादा हो जाती है तो बाढ़ आ जाती है। कभी-कभी उस बाढ़ में परिवार, रिश्ते, आसपास और हम खुद भी सभी बह जाते हैं। कोशिश यही हो कि बाढ़ आने ही न दें। शांति से सभी को उनकी आत्मा के अनुसार काम करने दें। बीच में आने पर वह पत्थर की तरह टुकड़े करके आगे बढ़ जायेगा। परन्तु जरूरी नहीं कि रास्ता अच्छा हो। जिससे प्यार करते हो उससे इतना भी लगाव मत रखो कि बाढ़ आ जाये। इसी में सभी की भलाई है।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

## आजाद परिदे



**अभिषेक सोनी**  
सामान्य कर्तव्य  
सहायक

आकाश आज बहुत उदास था। किसी चीज में उसका मन नहीं लग रहा था। अपनी दैनिक दिनचर्या से तंग आ चुका था वो। सुबह समय से ऑफिस जाना और सही समय से ऑफिस से वापस आ जाना। आजकल तो वो ऑफिस बंद होने के बाद भी वही रुकता। कभी किसी अपूर्ण कार्य को करने के बहाने तो कभी किसी की मदद से बहाने और रुके भी तो क्यों नहीं आखिर वो घर उसे काटने जो दौड़ता था। ऑफिस के बाद अकेले घर में उसका मन नहीं लगता था। जैसे कहने को उसके दो रूम मैट्रेस भी थे, पर पता नहीं क्यों उसे आजकल उनसे बात करने की इच्छा नहीं होती थी। दोस्तों के नाम पर उसके पास थे ही कौन – दो रूम मैट्रेस, एक चचेरा भाई और शीतल। या फिर बस तीन लोग। शीतल तो कब की उसकी जिंदगी से चली गयी, चली क्या गयी उसे जाना पड़ा। आज ऑफिस से छूटने के बाद फिर वही उबाऊ जिंदगी की तरफ जाते हुए उसके कदम उस टावर के नीचे रुक गए। आकाश को अपने पुराने दिन याद आने लगे, कैसे वो और शीतल इसी टावर के नीचे पहली बार मिले थे, वो तो आकाश को कोई गुंडा समझ रही थी।

भाई साहब आप थोड़ा एक तरफ होंगे, आप बीच रास्ते में खड़े हैं।

अचानक आई इस आवाज़ ने आकाश का ध्यान उस ख्याली दुनिया से हटाकर इसी दुनिया में ला दिया।

मुझे माफ़ करे भाई साहब बस इससे ज्यादा आकाश भी कुछ कह न सका।

वैसे कहानी में आकाश के एक चचेरे भाई का भी वर्णन किया है। वो भी रहता तो इसी शहर में है, पर अलग। अलग रहने के कुछ गोपनीय रहस्य है जिसका इस कहानी से कोई लेना देना नहीं है। वैसे आप सोच रहे होंगे की दोनों के बीच कोई मनमुटाव होगा पर आपकी जानकारी के लिए ऐसा कुछ नहीं है दोनों कभी कभी मिलते हैं और मज़े करते हैं।

वैसे समीर था तो सिंपल लड़का पर उसकी बात से आकाश बोर हो जाता था। दोनों थे तो अच्छे दोस्त पर सोच अलग अलग थी दोनों की। आकाश को आज की जिन्दगी पसंद थी, वही समीर सौ साल पुरानी बातें करता था। आकाश फ़ास्ट था तो समीर को लिमिट पसंद थी। समीर का जिंदगी को देखने का नजरिया अलग था। वो आज के दौर में रहकर भी रिश्तो को अहमियत देता था, वही आकाश के लिए रिश्ते इस्तेमाल करने के लिए होते थे।

पर आज आकाश को अपनी थ्योरी क्यों गलत लग रही थी। ऐसा नहीं था की वो अकेलेपन का शिकार हो चुका था, पहले भी बहुत बार वो अकेला रहा था पर आज उसे अकेला रहना अच्छा लग रहा था। शायद वो किसी का सामना करने से डर रहा था।

नहीं मैं ऐसे नहीं बैठ सकता, मुझे इस स्थिति से उबरना ही होगा।

उसे पता नहीं था की वो क्या करने जा रहा है पर आज उसे अन्दर से लगा की कुछ होने वाला है वो उठा और निकल गया अपनी बाइक से.....

ए मोटी क्या खा रही है

देख मुझे मोटी मत बोल, पछताएगा

चल जा ना बे, अब ऐसे दिन आ गए हैं की तुझसे डरू

तुने मुझे समझ के क्या रखा है, देख बेटा तेरे जैसे को कहा गायब कर दूंगी, पता ही नहीं चलेगा

धमकी दे रही है मुझे

हाँ धमकी दे रही हूँ, क्या कर लेगा



वो तो मैं सज्जन इंसान हूँ जो लडकियों पे हाथ नहीं उठाता, वरना....

वरना क्या, अबे सीधे-सीधे बोल न दम नहीं है

हे भगवान्, शराफत का तो जमाना ही नहीं रहा

ओह माय गॉड, भगवान। अबे तू कब से आस्तिक बन गया

वो तो ऐसे ही, बोलने में इफ्रेक्ट आता है

तू नहीं सुधरने वाला कभी, कभी तो मानेगा भगवान् को

तू मानती है न, इतना काफी है, वैसे भी भगवान के साथ अपना पुराना अनुभव कुछ ठीक नहीं रहा

अबे फ़िलासफ़ी बंद कर और चल यहाँ से, दस मिनट बाद ये टावर बंद हो जायेगा

यार ये भी ना, पता है न हम बात कर रहे है पर इसको तो इस टावर के बंद होने का इंतज़ार है, देख लेना एक दिन मैं तुम सब को छोड़ दूंगा तब याद करना की आकाश कितना अच्छा था।

बाइक चलाते हुए आकाश के चेहरे पर हलकी मुस्कान आ गयी उसने धीरे से खुद से कहा – आकाश ने सच में सबको छोड़ दिया।

क्रमशः .....

## अंधकार में एक प्रयास



विवेक पंत

कल निर्भया की माँ के स्वदन से दिल भर आया,  
सोचा चूक कहाँ रह गयी ?

कभी समाज की संकीर्ण मानसिकता को कोसा,  
तो कभी उस अपराधी की आँखों के निर्लज्ज भाव को,

उस कानून व्यवस्था की मजबूरी दिखी,

जो उसमें सुजनता का भाव ना जगा सकी,

अपराधी के वृद्ध माँ बाप का दर्द भी दिखा,

यही हमारे समाज का जीवंत आईना है।

पर हमने क्या किया ?

ये मैं और हम ही तो समाज के आधार हैं,

बस मौन रहा नाराज था शायद खुद से,

हाँ अपने आप से एक वादा जरूर किया,

जहाँ कहीं भी हो सम्मान और स्वतन्त्रता का भाव,

हाँ यही जरूरी भी है, शायद कुछ बदलाव नजर आए,

लगता है स्याही जवाब दे रही है हृदय भी भरा हुआ है।

अब तो सिर्फ सुबह का इंतजार है उस सुबह का जो इस काली रात को सच में छाँट दे।

## कीटभक्षी पौधों का अद्भुत संसार



डॉ. कंचन विश्वकर्मा  
हॉर्टिकल्चरिस्ट

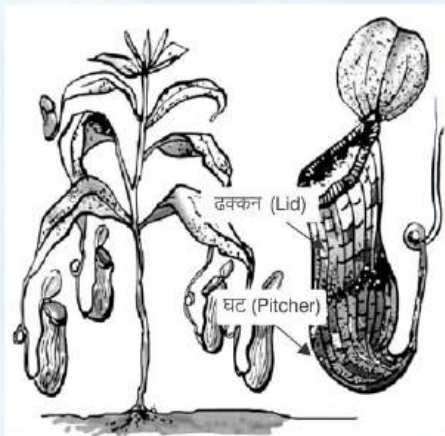
मांसाहारी पौधों का संसार, यह पौधों का एक अनूठा समूह है जो न केवल उनके पोषण के मामले में, बल्कि प्रकृति के संदर्भ में भी अन्य पौधों से अलग है। उनका रूप और आवास भी काफी अलग है। यह प्रकृति की अद्भुत रचना है जो प्रकाश संश्लेषण से अपना पोषण न करके कीटों से पोषण करता है। कीटों को आकर्षित करने, पकड़ने और पचाने वाले पौधों को मांसाहारी पौधे कहा जाता है।

सर्वप्रथम 1790 में थॉमस जेफरसन ने कीटभक्षी पौधों की कई प्रजातियों का विस्तृत अध्ययन किया और अपने प्रयोगों को, 1875 में चार्ल्स डार्विन द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'इन्सेक्टिवोरस प्लांट्स' में प्रकाशित किया। यह ग्रन्थ मांसाहारी पौधों पर पहला प्रसिद्ध ग्रंथ है।

अध्ययनों के अनुसार पृथ्वी पर कीटभक्षी पौधों की लगभग 460 प्रजातियाँ हैं जो मुख्य रूप से कटिबन्धीय क्षेत्रों में पाई जाती हैं। इनमें उत्तरी अमेरिका, दक्षिण एशिया और ऑस्ट्रेलिया प्रमुख हैं। भारत में मांसाहारी पौधों की 34 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

अक्सर कीटभक्षी पौधे काफी छोटे होते हैं। ये आम तौर पर पोषण-रहित मिट्टी में पाए जाते हैं। पेड़-पौधों के मांसाहार की ओर प्रवृत्त होने के पीछे पर्यावरणीय तनाव और संसाधनों के अभाव (नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम) की भूमिका होती है। अध्ययन से पता चलता है कि ये पौधे कई बार स्वतंत्र रूप से विकसित हुए हैं लेकिन पोषक संसाधनों की कमी के कारण ये नई ऊर्जा के स्रोत पर आश्रित हो गए। इस श्रेणी के कई पौधे अपनी रंग-बिरंगी पंखुड़ियों और रंगीन प्रकाश की मदद से कीटों को आकर्षित करते हैं और अपना पोषण करते हैं।

इसी वंश का घटपर्णी जिसे Pitcher Plant कहा जाता है एक कीटभक्षी पौधा है। इसकी उत्पत्ति श्रीलंका और असम से है। मुख्यतया ये पौधा का शाक (हशील) प्रवृत्ति होते हैं और दलदली या अधिक नम जगहों में उगते हैं। पौधे पतले धागों की सामान संरचना (Tendrils (तंतु)) के सहारे ऊपर चढ़ते हैं। ये तंतु पत्तियों की मध्यशिरा की विशेष वृद्धि (Outgrowth) के फलस्वरूप बनते हैं। यह रचना आगे बढ़कर घड़े के आकार जैसा हो जाता है, जिसे घट याने pitcher कहते हैं। घड़े के मुख के एक ओर एक ढकना जुड़ा होता है, जो शिशु अवस्था में घट के मुख को बंद रखता है। घट का किनारा अंदर की तरफ मुड़ा होता है और मुखद्वार पर बहुत सी मधुग्रंथियाँ और पाचन ग्रंथियाँ (Nectary gland and Digestive gland) होती हैं। यह पूरी संरचना बहुत ही चमकदार और रंगीन होती है जो उड़ने वाले छोटे कीटों को आकर्षित करता है। Nectary gland से चिप चिपा और मीठा पदार्थ निकलता है जैसे ही कीट इसके सम्पर्क में आता है वह घड़े नुमा संरचना से चिपक जाता है और नीचे की तरफ घड़े में फिसलता चला जाता है। घड़े में Digestive gland से निकलने वाला और अम्लीय पाचक रस भरा होता है। इस द्रव में पड़ने वाला कीट पहले डूब जाता है और तदुपरान्त पचा लिया जाता है। जिससे पौधों का पोषण होता है।



## सुदृढ़ शिक्षा - सशक्त युवा



**डॉ. अनन्या मिश्र**  
कम्युनिकेशन एग्जीक्यूटिव  
आईआईएम इंदौर

नचिकेता ने जब अपने पिता को सबकुछ दान करते देखा, तो उसने पिता से पूछ लिया – ‘आप मुझे किसे दान करेंगे?’ क्रोधित पिता ने उसे यमराज को दान दे दिया। बालक नचिकेता यमराज के पास सशरीर चला गया। यमराज ने उसे अनेक प्रलोभन दिए, लेकिन नचिकेता लौटने को ही तैयार नहीं था। उसने यमराज के समक्ष शर्त रख दी, कि जब तक उसे आत्म विद्या का ज्ञान नहीं मिलेगा, तब तक वह लौटेगा नहीं। हार कर यमराज को आत्म विद्या का ज्ञान देना पड़ा और यही ज्ञान कठोपनिषद् के माध्यम से अवतरित हुआ। यह वृत्तांत हमें बताता है कि भारत की युवा शक्ति में वह ताकत है कि वह यमराज से भी आत्मज्ञान प्राप्त करने की क्षमता रखती है। इसी युवा शक्ति को और भी मजबूत बनाने के लिए आवश्यक है कि हम उनकी नींव को सुदृढ़ बनाएं; और बेहतर, प्रासंगिक और संवेदनशीलता से परिपूर्ण शिक्षा ही इसका एकमात्र आधार है।

देश को आगे बढ़ाने में भी युवाओं की भूमिका हमेशा से अहम रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही देश के युवाओं ने देश के लिए असंख्य बलिदान दिए। हँसते-हँसते फांसी पर झूल जाना, अंग्रेजों की लाठियों एवं गोलियों का सामना करना और गिरफ्तार होने पर यातनाएं सहन करने के विवरणों से भारतीय इतिहास के पन्ने भरे हुए हैं। युवाओं के सम्पूर्ण विकास के लिए सर्वप्रथम हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि हमारे देश की संस्कृति ‘आनो भद्राः कृत्वो यन्तु विश्वतः’ अर्थात् विश्व के सभी श्रेष्ठ विचार हमें प्राप्त हों – पर आधारित है। प्राचीन काल से युवा आज तक, हर क्षेत्र में अपना परचम लहराने के लिए प्रयासरत हैं। जब पोखरण में परमाणु परीक्षण हुआ, तो उसका सम्पूर्ण श्रेय पूर्व सरकारों और युवा वैज्ञानिकों को दिया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले अधिकाँश देशों में या तो सैनिक शासन स्थापित हो गया या तानाशाही आ गयी। वर्ष 1975-1977 का आपातकाल अगर छोड़ दें, तो मात्र भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें लोकतंत्र न केवल पूरी शान से जीवित है, अपितु परिपक्वता की ओर बढ़ता भी गया है। 1977 के बाद देश की जनता अपने वोट की शक्ति भी पहचानने लगी है और इसका श्रेय युवा शक्ति के शिक्षित होने को जाता है।

विश्व के अनेक देश बूढ़े होते जा रहे हैं, जर्मनी, जापान और रूस जैसे देशों की युवा जनसँख्या घट रही है लेकिन विशेष सौभाग्य की बात यह है कि हमारे देश में निरंतर बढ़ती हुई युवा जनसँख्या ही हमारी निधि है। इस धरोहर को जाग्रत, जीवित और सतत प्रवाहमान बनाने का दायित्व जिन सशक्त युवाओं के कंधों पर है, वे देश की जनसँख्या का एक-तिहाई हैं। वर्ष 2022 तक जहाँ चीन, अमेरिका, पश्चिमी यूरोप और जापान में औसत आयु क्रमशः 37, 37, 45 और 49 रहेगी, वहीं भारत 28 वर्ष की औसत आयु के साथ विश्व का सबसे युवा देश बन जाएगा।

अब समय आ गया है कि देश के युवा सभी क्षेत्रों अपना श्रेष्ठतम प्रदर्शन कर सकते हैं। युवाओं की इसी असीम उर्जा का समुचित प्रयोग करने के लिए आवश्यकता है उन्हें बेहतर नागरिक बनाने सम्बन्धी विभिन्न उपायों की, जमीनी स्तर पर निर्मित की गयी महत्वपूर्ण नीतियों की और विद्यालयों और महाविद्यालयों में लोकतांत्रिक मूल्यों और परम्पराओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था की। अतः हमें एक ऐसे युवा कार्यबल का निर्माण करना है जो अच्छी तरह से शिक्षित और उचित रूप से कुशल हो।

यूनिसेफ 2019 की रिपोर्ट के अनुसार कम से कम 47% भारतीय युवा 2030 में रोजगार के लिए आवश्यक शिक्षा और कौशल प्राप्त करने योग्य नहीं हैं। जैसा की चाणक्य ने कहा है – ‘अयोग्यः पुरुषो नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभः’, अर्थात् कोई भी व्यक्ति अयोग्य नहीं है, केवल अच्छे योजकों की कमी है। देश की साझा विरासत और संस्कृति के संरक्षण के लिए युवाओं के प्रशिक्षण और सहभागिता की भी व्यवस्था होनी चाहिए। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा की प्रारंभिक नींव मजबूत बनाने के लिए स्कूल पाठ्यक्रम का आधुनिकीकरण किया जाए, शिक्षक प्रशिक्षण में व्यवस्थित रूप से निवेश हो और बड़े पैमाने पर खुले ऑनलाइन पाठ्यक्रमों (MOOCs) के साथ आभासी कक्षाओं को स्थापित करके मानव पूंजी के निर्माण की गति में तेजी लाने के लिए नई तकनीक का

प्रयोग किया जाए। महिला साक्षरता पर भी ध्यान देना आवश्यक है और उनके लिए लचीली प्रवेश और निकास नीतियां बनायीं जानी चाहिए। साथ ही, व्यावसायिक शिक्षा उन्हें समकालीन व्यवसायों तक पहुंचने में मदद करेगी, जो राष्ट्र निर्माण में योगदान देने में सहायक होगी।

युवाओं में सामाजिक जिम्मेदारी और संवेदना का भाव विकसित करने हेतु हमें उन्हें सिखाना होगा, कि हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पालन करते हुए सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानते हैं और साथ ही प्रकृति के प्रत्येक घटक में चेतना का दर्शन करते हुए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और प्राणिमात्र के कल्याण के लिए शुभकामना, शुभ संकल्प और शुभकर्म करते हैं। हम यह सिद्ध भी कर सकते हैं, क्योंकि सार्वभौमिक मानवता और प्राणिमात्र से एकात्म का यह दर्शन हमारी देश की संस्कृति का ही नहीं, अपितु वर्तमान समय में भी हमारी शिक्षा प्रणाली की भावधारा को प्रेरित करता है। जैसा की ज्ञात है, महात्मा गाँधी ने बुनियादी शिक्षा और नयी तालीम के माध्यम से शिक्षा के प्रासंगिक प्रतिमानों का उल्लेख किया है और गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन और उनके विचारों का सार भी नोबेल पुरस्कार से सम्मानित उनकी कालजयी कृति गीतांजलि में अभिव्यक्त हुआ है।

इतिहास गवाह है कि भारत की शिक्षा परंपरा में पहली बार विश्व में जगद्गुरु की अवधारणा धरातल पर प्रस्तुत हुई। इसका मूल कारण यह था कि भारत ने समकालीन ज्ञान को तो समझा ही, साथ ही अपनी जड़ों से जुड़े रहने का संकल्प भी बनाए रखा। इसलिए भारत की शिक्षा पारंपरिक होते हुए भी आधुनिक है। मूल्यों पर आधारित हमारे देश की शिक्षा योग से सूचना प्रौद्योगिकी तक विस्तृत है और यही पहचान भारत को विश्वगुरु बनाती है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय और नैतिकता पर आधारित भारत की शिक्षा सर्व समावेशी और सर्व कल्याणकारी अवधारणा पर आधारित है। भारत ने विद्या को भोग का नहीं अपितु मुक्ति का साधन माना है। बृहदारण्यक उपनिषद् ने परमात्मा से 'असतो मा सद्गमय तथा तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना करके शिक्षा के सम्पूर्ण लक्ष्य को साररूप में प्रस्तुत किया। भारतीयों ने इसी अवधारणा के चलते अपने ज्ञान और विचारों का प्रसार शस्त्र बल पर नहीं अपितु शास्त्र बल पर किया।

गौरतलब है कि विभिन्न विचारधाराओं पर आधारित होने के बाद भी भारत की शिक्षा परंपरा में वर्चस्व का संघर्ष कभी नहीं हुआ। मेक्सिको-अर्जेंटीना से जापान तक और तस्मानिया से ग्रीनलैंड तक हुई पुरातत्व खोजों में भारतीय संस्कृति और भारतीय शिक्षा का प्रसार कई बार प्रमाणित हुआ है। नालंदा और तक्षशिला के विश्वविद्यालयों के अवशेष आज भी भारत की शिक्षा की यशोगाथा गा रहे हैं। यहाँ सनातन और आस्तिक दर्शनों से लेकर घोर नास्तिक और अनीश्वरवादी दर्शन भी सामान आदर से पढ़ाए गए। देश की शिक्षा व्यवस्था प्रारंभ से ही मनुष्य के भीतर निहित गुणों को उत्कृष्टता के सर्वोच्च स्तर तक पहुंचाने के लक्ष्य से प्रेरित रही। 1947 में जहाँ नाममात्र के विश्वविद्यालय थे, वहीं अब कुल 911 हो चुके हैं और साथ ही 40,000 से अधिक महाविद्यालय हैं- जिससे कुल मिलकर 4 करोड़ से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा दी जा रही है। अर्थात् हमारे देश में युवाओं की शिक्षा के लिए असंख्य शिक्षक समर्पित हैं, जरूरत है तो मात्र इस युवा शक्ति के उचित मार्गदर्शन की।

स्पष्ट है कि विश्वस्तरीय ज्ञान की प्राप्ति, अंतर्राष्ट्रीय संपर्क, बदलते आर्थिक परिदृश्य, रोजगार तथा उद्यमिता के बदलते स्वरूप और नयी शताब्दी की परिवर्तनशील आवश्यकताओं के कारण एक से अधिक भाषा का ज्ञान विश्व में सभी के लिए आवश्यक है। इन सभी के समागम से ही हम हमारे देश के युवा को सशक्त बना पाएंगे, और राष्ट्र को परम वैभव के सर्वोच्च शिखर पर ले जाने में सक्षम हो सकेंगे।



जिस देश को अपनी भाषा और अपने  
साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है,  
वह उन्नत नहीं हो सकता।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

## शायरी



जूही रामचंद्रानी  
कार्यालय सहायक

हम मिलेंगे, इस जहां में न सही..  
खुले आसमान में, कही टिमटिमाते तारे बनकर...  
हम मिलेंगे फ़िज़ाओं में खुशबू बनकर..  
तेरी किताबों के हर पन्नों पर..  
तेरे हर लफ्जों में शायरी बनकर..  
हम मिलेंगे तेरे अफसानो में, दास्तान बनकर...  
तेरी हर खुशी में मुस्कुराहट बनकर ...  
इसलिए ...  
कुछ पन्ने किताब के अक्सर कोरे रह जाते हैं  
बिना लिखे ही यादों की मुस्कुराहट से ही भर जाते हैं ...  
सोच कर लिखते हुए इक मुस्कुराहट ही है  
क्या वो भी पढ़कर मुस्कराते होंगे...  
कितना अजीब है ना ये सिलसिला जिंदगी का !  
दूरियां सिखाती है, नज़दीकियां क्या होती है!  
और एक पल की मुस्कुराहट याद बन जाती है

मुझसे मेरी जिंदगी की कीमत, कोई पूछ रहा है,  
यूं हल्के से मुस्कुराना, मुझे याद आ रहा है... !!!  
ये बारिश की बूंदे भी, कितने अजीब है याद दिला ही देते  
यूं मुस्कुराना,  
वरना कौन गिरता इस जमीं पर, आसमान तक पहुंचने के बाद!  
किसी ने किताब लिखी, किसी ने करार लिखा...!!  
हमने तो अपने हर एक शेर में, मुस्कुराहट लिखी...!!!

## एहसास

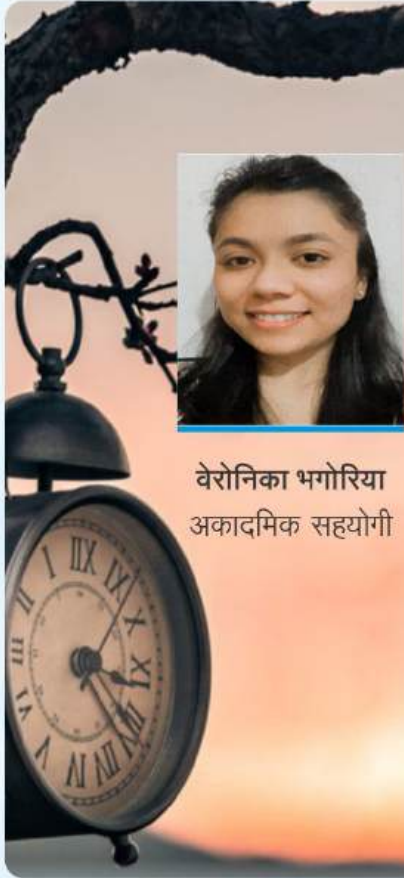


हेमंत सेठी  
कार्यालय सहयोगी

कौन जवाब देगा प्रकृति के इस सवाल पर,  
क्यों पड़ गई हैं झुर्रियां धरती माँ के गाल पर।  
खोखला कर दिया भूमि को पेड़ नोच कर,  
तो अब मन मे दर्द क्यों? भूमि के इस हाल पर,  
धुंए से जब आसमान ही जहरीला हो गया,  
तो अब कैसी हैरत इस जहरीली बरसात पर,  
हमने अपना आशियाना सजाया जिस पेड़ से,  
चिड़ियों का घोंसला था उसकी हर डाल पर,  
जब जंगलों को कटने से ना रोक पाए हम,  
होगा क्या, लगा कर रोक शेरों के शिकार पर,  
कौन जवाब देगा प्रकृति के इस सवाल पर,  
क्यों पड़ गई हैं झुर्रियां धरती माँ के गाल पर।







**वक्त**

क्यूँ सब अपने आप इस तरह छूटते जा रहा है,  
वक्त दिन ब दिन गुजरते जा रहा है।  
ना जाने कुछ भी क्यूँ हाथ नहीं आता,  
शायद मेरी पकड़ ही कमज़ोर रह गयी या फिर...  
बहुत कुछ पूरा करने की चाह में खुद ही अधूरी रह गयी।  
कहते हैं वक्त रेत की तरह फिसलते चला जाता है,  
पर मेरे हाथ मे तो वक्त भी पानी बन जाता है, ठहरता ही नहीं।  
ये स्व्वाहिश नहीं की वक्त को रोक सकूँ,  
बस इतनी चाहत है कि अपने आप को इस ज़रा से वक्त में समेट सकूँ।  
ज्यादा नहीं बस थोड़ा चाहती हूँ,  
मैं कोई और नहीं बस मैं रहना चाहती हूँ।  
इतना कुछ करना चाहती थी, पर शायद किस्मत साथ नहीं!  
ऐ खुदा! ये बता मेरी खुदाई में क्या वो बात नहीं?  
अपने बंदों को कभी उदास नहीं होने देता है तू  
पर इतनी परीक्षा ना ले कि बंदा उदासी को ही अपनी किस्मत समझ ले!  
खुशी की जगह आंसुओ को ही तेरा दिया हुआ तोहफा समझ ले!

वेरोनिका भगोरिया  
अकादमिक सहयोगी



**वज़ूद**

हूँ बहुत भ्रमित सी मैं, निकली अपनी गहराई से  
डोल रहा जग जीवन मेरा, लड़ती अपनी परछाई से।  
घना अंधेरा शोरगुल, हँसती- खिलखिलाती बौराई में  
बना हुआ विश्वास मेरा, ऐसा है आगाज़ मेरा, आसमानों की ऊँचाई में।  
दिन- रात तपी, जुल्म सही, दुनिया बड़ी हरजाई है ये  
रुकूँगी नहीं चलूँगी मैं, मन ने आवाज़ लगाई है ये।  
समाज की इस हठ में, हुई बड़ी पराई मैं  
निस्वर रहा है अब रंग मेरा, हँसकर यूँ इठलाई मैं।  
यूँ झोंपी शर्माती सी, इस कठोर कड़ाई में  
सर उठाकर हूँ तैयार, मैं अपनी इस लड़ाई में।  
है वज़ूद मेरा बड़ा, करना तू अभिमान  
मेरे ही तुझमें अंश है, तू कर इसका सम्मान!  
तू कर इसका सम्मान!

शुभ्रिका श्रीवास्तव  
अकादमिक सहयोगी

## मां तू भूल गई मुझको ...



प्रतिभा त्रिपाठी

तू तो कहती थी  
मैं सब कुछ हूँ तेरे लिए  
बिटिया के आने से आई  
खुशियां तेरे लिए  
तू ही कहती थी कि मैं  
सतमासा जन्मी थी  
डॉक्टर ने बोला था कि  
मैं मरने वाली थी  
पर तूने अपनी कोशिश से  
मुझे बचाया था  
दिन रातों को जाग जाग कर  
मुझे सुलाया था  
फिर जाकर एक स्वस्थ बेटी को  
खूब पढ़ाया था  
अपने जी जानो से मुझ में  
प्यार जगाया था  
तेरी आंखों ने मेरा  
उज्ज्वल भविष्य देखा  
फिर तूने ही रो रो कर  
मुझको हॉस्टल भेजा  
मैं बाहर हर पल तुझको ही  
याद किया करती थी  
हर दिन के कॉलों को मैं रिकॉर्ड किया करती थी  
दो दिन तक कोई कॉल ना आया  
तब मैंने पापा को कॉल लगाया  
पापा बोले मां हॉस्पिटल में भर्ती है

लेकिन हर पल याद तुझे करती है  
फिर मैंने ना जाने  
कहां से हिम्मत जुटाई  
घर वापस जाने को  
पहली टिकट कराई  
शाम को मैं घर पहुंची तो  
भक्क रह गई पापा की देख रुलाई  
मां मुझको अब भूल गई थी  
मैं किसको देती दुहाई  
उसका शव छूने तक की भी  
मुझे इजाजत नहीं थी  
बंधी पड़ी थी ऐसे कि  
उसकी कोई बेटी नहीं थी  
एक बार लिपट कर  
उस के गालों को छूकर  
मैं पूछना चाहती थी  
मां तू भूल गई मुझको  
मां क्यों भूल गई मुझको



## वैश्विक परिदृश्य में भारत की मौजूदा स्थिति



**शैलेश टटवारे**  
कार्यकारी सहायक

वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने विकास के 17 लक्ष्यों को आम सहमति से स्वीकार किया। उक्त महासभा ने विश्व के बेहतर भविष्य के लिये इन लक्ष्यों को महत्वपूर्ण बताया तथा वर्ष 2030 तक इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये इसके क्रियान्वयन की रूपरेखा सदस्य देशों के साथ साझा की।

इनमें गरीबी और भुखमरी खत्म करना, अच्छी सेहत एवं आरोग्य, अच्छी शिक्षा, लैंगिक समानता, साफ पानी एवं स्वच्छता, किफायती एवं स्वच्छ ऊर्जा, अच्छा कार्य एवं आर्थिक विकास, उद्योग, नवोन्मेष एवं अवसंरचना शामिल हैं। इसके अलावा असमानता घटाना, स्थायी शहर एवं समुदाय, जिम्मेदार उपभोग एवं उत्पादन, जलवायु कार्रवाई, भूमि पर जीवन, शांति, न्याय एवं मजबूत संस्थान और अंत में लक्ष्यों के लिए वैश्विक साझेदारी को ठोस करना शामिल है।

'भारत में पर्यावरण की स्थिति रिपोर्ट 2021' में सामने आया कि भारत का कुल एसडीजी (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल) स्कोर 100 में से 61.9 है। अभी भारत का स्थान चार दक्षिण एशियाई देशों – भूटान, नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश से नीचे है। इसका कारण है कि भुखमरी समाप्त करने और खाद्य सुरक्षा हासिल करने (लक्ष्य क्र दो), लैंगिक समानता हासिल करने (लक्ष्य क्र पांच) और लचीली अवसंरचना का निर्माण, समावेशी एवं सतत औद्योगिकीकरण तथा नवोन्मेष को बढ़ावा देना (लक्ष्य क्र नौ) जैसे बड़े लक्ष्यों में अब भी हम पिछड़े हुए हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में क्यूएस एवं टाइम रैंकिंग जो की विश्व में विश्वविद्यालयों की रैंकिंग तय करता है पर दृष्टि डालें तो हाल ही में जारी की गई रैंकिंग के आधार पर टॉप 100 तो क्या हम टॉप 150 में भी नजर नहीं आते जिसका मुख्य कारण न के बराबर क्वालिटी रिसर्च और विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात है।

ऐसा नहीं है कि हम इन निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकते, इसके लिए मानसिकता में बदलाव बहुत जरूरी है जैसे सांकेतिक तौर पर अचानक बारिश होने पर खेल के मैदान को सुरक्षित करने के लिए हमारे देश में प्रयास साधन मिल जायेगा लेकिन खाद्य सामग्री अनाज इत्यादि के लिए नहीं जिसके कारण करोड़ों क्विंटल अनाज बिना उपयोग के खराब हो जाता है। राजनेताओं की दोहरी पेंशन, सरकारों की उपलब्धियों के विज्ञापनों पर खर्च, अनियंत्रित राजनितिक पार्टी फण्ड इत्यादि।

शीर्ष नेतृत्व के अवसर बहुत है, जब हम दुनिया को गिनती सिखा सकते जिसके पीछे पूरा विज्ञान टिका हुआ है, आज हमारी योग शिक्षा जो पुरे विश्व में अपनी पहचान बना चूका है ऐसे ही हर क्षेत्र में हम अग्रणीय हो सकते हैं जरूरत है तो केवल निर्णायक सोच में बदलाव की।



हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है  
जिनके बल पर वह विश्व की  
साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में  
सभासीन हो सकती है।

मैथिलीशरण गुप्त



मयंक रमनानी  
अकादमिक एसोसिएट

## सपने

यूँ ही मन में आ जाते हैं  
फिर दिल में समा जाते हैं  
कभी हँसाते हैं, कभी रुलाते हैं  
कभी बेचैनी बन कर रातों को जगाते हैं  
सपने, आशाओं की डोर से बुने सपने!  
कुछ पा लेने के सपने, कुछ कर दिखने के सपने  
कुछ बन जाने के सपने, मंज़िल पा लेने के सपने  
सपने, उमीदों के पर लगाए हुए सपने!  
ये सपने लक्ष्य बन जाते हैं,  
इन्हे सच करने की कश्मकश जागते हैं,  
जीने की वजह से बन जाते हैं,  
यह छोटे-बड़े सपने!  
पर साकार होने के खातिर, सपने कीमत मांगते हैं,  
रातों की नींदें, फुर्सत की दोपहरें,  
फिर सच हो जाएं तो खुशियों की बहार लाते हैं,  
और टूट जाएं तो मायूसियों का दरिया, लोग आँखों से बहते हैं।  
माना ये सपने ज़िन्दगी को अलग अलग भावों से,  
भिन्न-भिन्न रंगों से भरते हैं,  
पर सिर्फ सपनों के पीछे भागने वाले,  
आज में बसी छोटी-छोटी खुशियों का आनंद कहाँ लेते हैं?!सपने तो रहते हैं स्वर्णिम भविष्य में,  
पर आज में जीती ज़िन्दगी है!  
ऐ बावरे मन मेरे, तू सपनों की राहों का राही है  
पर मंज़िल की तलाश में, रास्तों के नज़ारों का भी मज़ा लेना  
क्योंकि जीवन एक यात्रा है,  
मंज़िल से भी खूबसूरत रास्ता है!  
तू इस रास्ते में अपनी का साथ ना छोड़ना  
सपनों के साथ-साथ अपनी को भी चुनना  
रास्ते के पलों में ही बनती है ज़िन्दगी भर की यादें  
आज के किस्से ही बनते हैं कल की कहानी की बुनियादें  
सपनों की राहों में बढ़ते जाना है, पर रास्तों का भी लुप्त उठाना है  
आज में रहते खुशियों के पल चुराना है,  
कल किसने देखा, हमें तो आज में पल बिताना है !



## एक विचार एक चिन्तन



डी. कोडवानी

सृष्टि की रचना के साथ ही परमात्मा ने इस सृष्टि पर सतो गुण (तामसिक) की भी सृष्टि कर दी। कहीं सतो गुण प्रधान है, तो कहीं रजो गुण तो कहीं ताम गुण की प्रधानता है। तीनों गुणों की अपनी अपनी क्षमता है और अपना अपना गुण और प्रभाव है। हर मनुष्य में भी ये तीनों गुण मौजूद रहते हैं। किसी मनुष्य में किसी गुण की प्रधानता अधिक होती है। उसका व्यवहार, उसकी रहन-सहन, उसकी बोल-चाल और उसका खान-पान आदि से इन गुणों की प्रधानता का परिचय होता है। खान-पान, रहन-सहन, उठना-बैठना आदि में परिवर्तन से इन गुणों में परिवर्तन सम्भव है इसीलिए जब कोई बीमार होता है तो डाक्टर उसके खान-पान में परिवर्तन को सलाह देता है इस प्रकार किसी के खान-पीने में परिवर्तन करने पर उसके स्वास्थ्य पर तो प्रभाव पड़ता ही है। साथ में उसके व्यवहार पर भी प्रभाव पड़ता है। यह परिवर्तन उसके भोजन में आए परिवर्तन से होता है। मनुष्य के व्यवहार में भी परिवर्तन सम्भव है, यदि

वह अपने रहन-सहन में परिवर्तन करे तो उसके व्यवहार में भी परिवर्तन आएगा। उसके खाने पीने में परिवर्तन से भी उसका व्यवहार बदलेगा। यहा तक भी देखा गया है कि यदि उसके मिलने जुलने वाले लोगों में परिवर्तन आ जाए तो धीरे-धीरे उसके व्यवहार में भी परिवर्तन आ जाएगा। इसलिए लोग मौसम के हिसाब से अपनी रहन सहन में परिवर्तन करते हैं। अपने खान-पान में परिवर्तन लाते हैं। इसलिए हर जगह का अपना-अपना खान-पान है। उस जगह का खान-पान वहां की मौसम और वहां की उपलब्धता पर निर्भर रहता है। उदाहरण स्वरूप पंजाब, हरियाणा आदि को लीजिए वहां पानी की कोई कमी नहीं रहने के कारण अच्छी फसल होती है वहां का मुख्य अनाज गेहूं, मक्का और बाजरा है। आजकल चावल भी काफी हो रहा है। खूब हरियाली और तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो मौसम थोड़ा ठण्डा रहता है। वहां दूध, घी भी कॉफी होता है। वहां के लोगों का मुख्य भोजन गेहूं, बाजरा, मक्का, घी, दूध, मक्खन इत्यादि है। इसलिए वहां के लोग काफी हृष्ट पुष्ट और गोरे होते हैं। घी, दूध आदि का सेवन खूब करते हैं इसलिए वहां के लोगों में रजोगुणी प्रवृत्ति अधिक है। जरूरत पड़ने पर अन्याय के खिलाफ संघर्ष के लिए तैयार हो जाते हैं। विदेशी आक्रमणों को यहीं के लोगों ने सबसे ज्यादा झेला है। सेना में भी यहीं के कई नवजवान हैं। जो सदैव देश की सुरक्षा में अग्रणी रहते हैं। ये लोगों की रजोगुणी प्रवृत्ति ही है। जो उन्हें सदैव सजग रखती है। यहाँ भी लोग शारीरिक दृष्टि से मजबूत होते हैं। आजादी की लड़ाई में पंजाब से लेकर बंगाल तक लोग सक्रिय रहे। जिन्होंने अंग्रेजों से लोहा लिया और देश आजाद किया। देश की आजादी में इनकी भूमिका अहम रही। ये रजोगुणी प्रवृत्ति ही थी जो वहां के पानी मिट्टी और अनाज में समाई भी और लोगों को सक्रिय रहने में मदद करती थी।

मनुष्य की मानसिकता मुख्य रूप से उसके भोजन पर निर्भर रहती है। भोजन के सिवाय जलवायु, विभिन्न लोगों के बीच में उठना बैठना उसकी निजी शिक्षा और समाज का नेतृत्व भी मनुष्य की मानसिकता में भारी परिवर्तन लाता है। उदाहरण स्वरूप भारत कई वर्षों से अंग्रेजों का गुलाम था। उचित नेतृत्व के अभाव में वह गुलामी झेलता रहा। लेकिन जैसे ही देश को सर्वश्रेष्ठ नेतृत्व मिला, पूरे देश में आजादी की लहर जाग उठी। लोग आजादी के लिए उठ खड़े हुए। पूरे देश में आजादी की हुंकार उठने लगी। यह नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद एवम् ऐसे ही अन्य लोगों के नेतृत्व में लोगों के हृदय में स्वतंत्रता की जाग सुलगा दी और अन्ततः अंग्रेजों को भारत छोड़ना ही पड़ा और देश आजाद हुआ। ऐसे वीर अमर शहीदों को लोगों के दिल में रजोगुणी शक्ति का संचार किया था ऐसे नेतृत्व के अभाव में पूरा देश तामसिकता की चादर ओढ़कर सो रहा था। इन वीरों की रजो गुणी शक्ति के संचार ने पूरे देश को जगा दिया था और अंग्रेज भागते और छिपते नजर आ रहे थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर और दिनकर जैसे महान कवि अपने काव्य और गायन से रजोगुणी शक्ति का संचार करते हैं। इसके पहले भी मुगल काल में जब पूरा देश तामसिकता की चादर ओढ़कर चुप चाप अत्याचार सह रहा था। भक्ति रस के कवि जैसे कबीर, सूरदास, तुलसीदास, मीरा, रसखान आदि जैसे भारत के हृदय सम्राटों ने लोगों के हृदय में भक्ति रस रूपी सतों गुणी शक्ति का संचार कर तामसिकता के अंधकार को मिटा दिया था। फिर वीर शिवाजी और सिखों के दसवें गुरु महान गुरु गोविन्दसिंह ने लोगों के हृदय में रजोगुणी शक्ति का संचार किया और देश के वीर उठ खड़े हुए। अत्याचार के खिलाफ तलवार उठी और पाप पर अंकुश लगा। इतिहास गवाह है। जब-जब तामसिकता की काफी छाया ने, पैर फैलाए हैं, तब तब रजोगुणी

और सतोगुणी नेतृत्व उभरा है। और उसने तामसिक शक्ति का दमन किया है। लोगों को पतन से बचाया है। महाभारत के पीछे भी नहीं प्रमुख कारण था। समाज में तमोगुणी नेतृत्व चारों तरफ फैला हुआ था। सतोगुणी शक्ति विलुप्त हो चुकी थी। भगवान कृष्ण ने समाज में रजोगुणी शक्ति का समाप्त किया और पूरा समाज दो गुटों में बंट गया। पूरी तमोगुणी शक्ति ने मिलकर भगवान श्री कृष्ण का विरोध किया और महाभारत में कौरवों का साथ दिया महाभारत में कौरवों की सेवा पाण्डवों की सेना के मुकाबले काफी बड़ी थी भगवान श्री कृष्ण भी पाण्डवों की सेना में निहत्थे थे। पाण्डव सेना युद्ध में भगवान श्री कृष्ण के मार्गदर्शन में लड़ी। कम सेना होते हुए भी भगवान श्री कृष्ण ने महाभारत को युद्ध में दिखा दिया कि हमेशा सत्य की विजय होती है। सत्य पर आधारित रजोगुणी शक्ति ने तमोगुणी शक्ति पर विजय हासिल की। पाण्डव विजयी हुए महाभारत युद्ध के लगभग दो हजार वर्ष पश्चात फिर तमोगुणी शक्ति ने भारत में सिर उठाया। रजोगुणी और सतोगुणी शक्ति पूर्णतया निष्क्रिय हो चुकी थी। पाप का चारों तरफ बोल बाला था। जनता पूर्ण रूपेण दुःखी थी। उसी समय महान गुरु चाणक्य ने उस समय के क्रूर सम्राट नन्द को समझाने का प्रयास किया। उस अत्याचारी सम्राट को महान चाणक्य की सलाह मानने के बदले उसे अपमानित किया। इतिहास में दर्ज है कि किस तरह चाणक्य के अथक प्रयास से चन्द्रगुप्त जैसा वीर सेना नायक तैयार हुआ और एक बड़ी सेना का गठन किया गया। गुरु चाणक्य ने सेना और सेनानायक में रजोगुणी शक्ति का संचार किया और उसके नेतृत्व में बहुत बड़ा युद्ध हुआ। और अन्त में सत्य की विजय हुई। तमोगुणी शक्ति पर रजोगुणी शक्ति ने विजय हासिल की। महापातकी सम्राट नन्द भाग गया चाणक्य की रजोगुणी शक्ति ने सम्राट नन्द की तमोगुणी शक्ति पर विजय हासिल की। चाणक्य ने धीरे-धीरे तमोगुणी शक्ति को क्षीण किया। रजोगुणी और तमोगुणी शक्ति को सक्रिय किया चारों तरफ शक्ति स्थापित हो गई। लोगों के कपट भरा जीवन में सुख का संचार हुआ। सभी सुख भरा जीवन यापन करने लगे इसीलिए गुरु चाणक्य का युग सम्राट चन्द्रगुप्त से लेकर सम्राट अशोक तक का समय नागरिकों के लिए सुखमय रहा। यही काल भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित है। इस युग में तमोगुणी शक्ति क्षीण रही रजोगुणी और सतोगुणी शक्ति और पल्लवित होती रही। इतिहास गवाह है जब-जब सतोगुणी और रजोगुणी शक्ति क्षीण हुई है। और तमोगुणी शक्ति ने सिर उठाया है। जनता दुखी हुई है। पाप बढ़े हैं। अत्याचार बढ़ा है इसीलिए समाज से नेतृत्व को सदैव सजग रहना होगा। जिससे कि तमोगुणी शक्ति सिर न उठा पाए। हमेशा समाज में रजोगुणी और सतोगुणी शक्ति का प्रभाव बना रहे।

व्यक्तिगत जीवन में भी सदैव ध्यान रखना होगा कि तमोगुणी शक्ति जीवन में हावी न होने पाए। यह सम्भव है प्रत्येक घर में भोजन पर ध्यान देने से। भोजन हमेशा सात्विक रहे। कभी कभी राजसिक भोजन लेने में कोई हानि नहीं है। तामसिक भोजन हमेशा त्याज्य रहे। सात्विक भोजन लेने से तन तो निरोग रहेगा ही साथ में मन भी चंचलता से मुक्त रहेगा और शांत रहेगा। मन में सदैव सात्विक विचार उभरेंगे। आज जो समाज में कहीं कहीं अशांति दिखती है। लूट-पाट झगड़े इत्यादि होते हैं। उनको मुख्य कारण है तामसिक विचारों की उत्पत्ति। और ये तामसिक विचार उत्पन्न होते हैं, तामसिक भोजन के कारण इसीलिए कहा गया है, कि जैसा अन्न वैसा मन अतः हमेशा यह प्रयास होना चाहिए कि भोजन सदैव सात्विक रहे। इसकी शिक्षा हमें अपने बच्चों को उनके बचपन से देनी होगी। स्कूली पाठ्यक्रम में भी इसको शामिल करना होगा। हर बच्चे को इसकी जानकारी मिले कि उसमें किस तरह का भोजन करना चाहिए। सात्विक भोजन करने से बच्चों की बुद्धि कुशाग्र होगी और कभी कभी राजसिक भोजन करने से शरीर बलिष्ठ होगा। और तामसिक भोजन करने से मन में तामसिक विचार उठेंगे। मन अत्यधिक चंचल हो उठेगा इसलिए तामसिक भोजन कभी न ले। भोजन से सम्बन्धित पूरी जानकारी होने पर, वह जब भी भोजन करेगा, उसको आभास होगा कि वह किस श्रेणी का भोजन ले रहा है। इससे वह हमेशा तामसिक भोजन से दूर रहेगा। इसके लिए बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता को भी इस पर पूरा ध्यान देना होगा। उन्हें भी अपने को तामसिक आहार से दूर रहना होगा। तभी बच्चे भी इससे बच सकेंगे। भोजन से सम्बन्धित खुर अमल न करके, केवल बच्चों को शिक्षा देना फलदायी नहीं होगा। यदि समाज में बहुमत सात्विक विचारों के लोगों का हो जाए तो समाज की बहुत सारी समस्याएँ स्वतः ही हाल हो जाएगी। आज जो चारों तरफ लूट खसोट, चोरी डकैती आदि की घटनाएँ सुनने में आती हैं। इसका कारण मुख्य रूप से समाज में फैली तामसिकता है। लोग क्षणिक लाभ के लिए, भौतिक सुख के लिए, कुछ भी अनैतिक करने को आतुर रहते हैं। वे अनजान हैं कि ये भौतिक सुख तो क्षण मात्र का है। भौतिक जरूरतों की पूर्ति तो करनी ही होगी, लेकिन इस पूर्ति के लिए हमें

सात्विक मार्ग को चुनना होगा। तामसिकता से परे रहना होगा। हमें ऐसी व्यवस्था चुननी होगी जिससे सात्विकता में वृद्धि हो। और तामसिकता में कमी जाए। आखिर मनुष्य का जन्म केवल भौतिक समस्याओं में उलझकर रहने के लिए नहीं है। उसका लक्ष्य परम पुरुष को पाना है। उस विराट को पाना है। इस विराट और विशाल की चाह में वह केवल भौतिकता में उलझकर रह जाता है। और अपना लक्ष्य भूल जाता है। भौतिकता की चकावंध में वह पथ भ्रमित हो जाता है। विराट की चाह में और उसकी खोज में वह सीमित भौतिकता में भटक जाता है। सत पथ का नहीं तमागुणी पथ को अपना लेता है। नतीजा धीरे-धीरे वह उस विराट से दूर होता जाता है। लक्ष्य के विपरीत दिशा में चला जाता है।

सात्विक आधार तो चाहिए ही लेकिन तमोगुणी शक्ति को नियन्त्रण में रखने के लिए हमें रजो गुणी शक्ति की मदद लेनी पड़ेगी। जीवन में हर जगह तामसिक वृत्तियाँ नजर आती हैं। इस पर नियन्त्रण रखने के लिए हमें रजो गुणी शक्ति की मदद लेनी पड़ती है। केवल रजोगुणी शक्ति की सहायता से हम तमोगुणी प्रभाव को सीमित कर सकते हैं। उसको बढ़ने से रोक सकते हैं। इसीलिए तो ग्राम पंचायत में सरपंच इन तमोगुणी लोगों पर नज़र रखता है। वे अपने दायरे में रहते हैं उसी तरह हर तहसील और जिले में व्यवस्था रहती है। पुलिस व्यवस्था के पीछे भी यही उद्देश्य है। पुलिस अपने क्षेत्र में शान्ति बनाए रखने के लिए समाज में जो तामसिक प्रवृत्तियों के लोग हैं उन पर सख्त नज़र रखती है यदि आवश्यक हुआ तो उन्हें गिरफ्तार भी करती है। इसलिए हर जिले में जगह-जगह थाने हना दिए गये हैं। जहां से वे अपने क्षेत्र में शान्ति व्यवस्था बनाए रखती है। इस पुलिस महकमे में भी कुछ व्यक्ति तामसिक वृत्तियों के घुस गए हैं। जहां वे अपनी स्वार्थ सिद्धि की आड़ में अपना कर्तव्य भूल जाते हैं हर छोटी-छोटी बात में पैसा वसूल कर अपने कर्तव्य को भूल जाते हैं। एक तो इस विभाग में दूसरी जगहों से काफी कम वेतन मिलता है। दूसरे इनके कार्यकाल का समय निश्चित नहीं रहता। कभी-कभी तो इन्हें लगातार चौबीसों घण्टे ड्यूटी पर तैनात रहना पड़ता है। भर्ती के समय सिपाही वर्ग में कम पढ़े लिखे लोग लेते हैं। इन्हीं सब कारणों से पुलिस विभाग भ्रष्ट लोगों का गढ़ बना हुआ है। कम शिक्षा, कम वेतन और असंयमित कार्य इस वर्ग में तामसिक वृत्तियाँ पनपने में सहायक रहती हैं अतः आवश्यकता है।

इस वर्ग में अच्छे पढ़े लिखे लोग लिए जाए उन्हें अच्छा वेतन दिया जाए तथा साथ-साथ उन्हें अच्छा शारीरिक गठन और स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए उचित व्यवस्था हो। उन्हें लगातार नैतिक शिक्षा भी दी जाए। पुलिस के हर वर्ग को अधिकतम सुविधाएं भी सुलभ हो। ऐसा करने से आज जो पुलिस से सम्बन्धित जन साधारण में धारणा बनी हुई है उसमें बदलाव आएगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी और उनके दैनिक कार्य में चुस्ती के लिए इनको ट्रेनिंग में सतोगुणी आधार लिए रजोगुणी प्रवृत्ति विकसित करने की भी व्यवस्था होनी चाहिए। यह सब सम्भव है, उनके नियमित जीवन में योग और आध्यात्मिक साधना की आदत डालने से।

सत पथ पर चलने की चाह लगभग सबमें है। पर पथ प्रदर्शन के अभाव में वे भ्रमित हो जाते हैं। चाहे अनचाहे तामसिक पथ के राही बन जाते हैं। इस तरह वे अपने लक्ष्य के विपरीत दिशा में चल पड़ते हैं। हर मनुष्य के मन में उस अनन्त को पाने की लालसा रहती है। अनन्त को पाया जा सकता है सत पथ के द्वारा। सतोगुणी खान-पान, रहन-सहन और सतोगुणी विचार उसे सत पथ पर चलने में सहायक होते हैं। सत पथ पर सतत चलने के लिए और आगे बढ़ने के लिए मार्ग दर्शक और चिन्तक की नितांत आवश्यकता है। इसके अभाव में हमेशा पथ भ्रष्ट होने की सम्भावना बनी रहती है।

सत पथ का प्रदर्शक और निदेशक जितना मजबूत होगा, हमें सत पथ पर आगे बढ़ने में उतनी ही सुगमता होगी। आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ने में पथ प्रदर्शक को गुरु की संज्ञा दी गई है। गुरु जितना सबल होगा उस पथ पर आगे बढ़ने में हमें उतनी ही सुगमता होगी। हमें हर कष्ट में वह सदैव मददगार होगा। इसकी चर्चा सदियों से होती आई है। कबीर, गुरु नानक, सूर तुलसी आदि कई सन्तों ने इसकी चर्चा की है।

सत पथ पर चलने का सामर्थ्य तभी सम्भव है जब व्यक्तिगत जीवन में भी अधिक सात्विकता होगी। जीवन में सात्विकता लाने के लिए हमें अपने जीवन में न केवल सात्विक आहार को अपनाना होगा बल्कि सात्विक माहौल भी बनाना होगा। अपना व्यक्तिगत जीवन साफ सुथरा रखना होगा। चरित्र को सुदृढ़ बनाना होगा। इसके लिए हमें अपने आधार को मजबूत करना होगा और यह तभी सम्भव है

जब हम अपने व्यक्तिगत जीवन में आध्यात्मिक साधना करेंगे। इसके लिए नैतिक दृढ़ता अनिवार्य है। नैतिक दृढ़ता साधना के बिना सम्भव नहीं और नैतिकता में दृढ़ता साधना के बिना सम्भव नहीं। साधना और नैतिकता का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है और सत पथ का आधार है।

## नैतिकता और आध्यात्मिक साधना

आध्यात्मिक आधार होगा तो नैतिकता रहेगी ही जब दोनों है, तो सत पथ पर आगे बढ़ने में कोई रुकावट नहीं। परमात्मा को पाने का यही एक पथ है। यही सत पथ है।

सत पथ के राही को अनिवार्य है कि प्रसंगत: वह अपने भोजन में सात्विकता लाए। सात्विक भोजन होगा तो निश्चित ही उसके मन में सात्विक विचार उभरेंगे। सात्विक आहार और सात्विक विचार ही मनुष्य को उसके सत पथ पर चलने में सहायक हैं। और इसी सत पथ पर चलकर हम अपने जीवन में सही अर्थों में प्रगति पा सकते हैं। आनन्द मार्ग की साधना पद्धति में साधक को सबसे पहले तामसिक भोजन और तामसिक विचार त्यागने की सलाह दी जाती है। और उसे हिदायत दी जाती है कि वह केवल सात्विक भोजन ही ग्रहण करेगा। हां कभी कभी राजसिक भोजन में परहेज नहीं। लेकिन तामसिक भोजन पूर्णतया त्यागना ही होगा। साधना करने से सतोगुणी विचार होंगे और साधक स्वतः ही तामसिक भोजन से दूर होता जायेगा और कुछ समय के बाद तो उसे तामसिक भोजन अच्छा ही नहीं लगेगा। यही है सात्विक पथ पर चलने का लाभ। आनन्द मार्ग की पुस्तक चर्याचर्य और साधकों की मार्ग दर्शिका में आहार से सम्बन्धित स्पष्ट दिशा निर्देश है। श्री श्री आनन्दमूर्ति जी ने सात्विक, को इस तरह परिभाषित किया है।

## आहार

जगत की सभी वस्तुओं में सत, रज, तम इन तीन गुणों में एक विशेष की प्रधानता देखी जाती है। खाद्य पदार्थ भी तदनुसार सात्विक, राजसिक और तामसिक इन तीन भागों में विभक्त है।

- 1) **सात्विक आहार** – चावल, गेहूँ, जौ इत्यादि सभी प्रकार के मुख्य अन्न। मसूर और खेसारी छोड़कर सभी प्रकार की दाल। सभी प्रकार के फल-मूल, दुग्ध एवम् दुग्ध से बने इत्यादि। सफेद बैंगन, प्याज, लहसुन, छत्ता (मशरूम) छोड़कर सभी प्रकार की तरकारियां। साग एवम् सरसों साग छोड़कर सभी प्रकार के साग।

गरम मसाला छोड़कर सभी प्रकार का मसाला एवम् सभी प्रकार के मिष्ठान खाए जा सकते हैं। शरीर और मन दोनों के लिए उपकारी सभी प्रकार का आहार ही सात्विक है।

- 2) **राजसिक आहार** – शरीर और मन दोनों में किसी एक के लिए उपकारी तथा दूसरे के लिए प्रभाव युक्त खाद्य को राजसिक कहा जाता है। सात्विक एवम् तामसिक श्रेणी में जो नहीं आते इस प्रकार के सभी आहार राजसिक खाद्य की श्रेणी में गिने जाते हैं। तुषारपान के समय देश विशेष में राजसिक खाद्य सात्विक तथा तामसिक खाद्य राजसिक खाद्य की श्रेणी में आ जाते हैं।

- 3) **तामसिक आहार** – शरीर एवम् मन दोनों में किसी एक के लिए हानिकारक होता है तथा मन को चंचल करता है। और मन को एकाग्र करने में बाधा पहुंचती है। ऐसे आहार तामसिक आहार हैं।

बासी और सड़ी वस्तु, बड़े जानवर का मांस, सभी प्रकार के मादक द्रव्य तामसिक आहार है। जो आहार शरीर के लिए लाभप्रद है मन के लिए न लाभप्रद है न हानिप्रद है वह राजसिक आहार है।



## मनमधु



पल्लवी चौहान

मंडला और मधुबनी से मिलकर बनी है मनमधु। मेरे लिये कुछ खास, मेरे शब्दों में कहें तो मंडला का गोल आकार ब्रम्हांड और मधुबनी के भिन्न-भिन्न आकार जीवन चरण को दर्शाते हैं।

मनमधु चिंतन और ध्यान की तरह है। चलिए आपको पुरातन काल से चली आ रही इस पारंपरिक कला के कुछ अनछुए पहलुओं से आपको मिलवाते हैं।

मैं बचपन से ही, अपनी मां को घर के आंगन में तस्वीरें बनाते देखती थी और इन तस्वीरों के बने बिना तो हमारे यहां कोई त्योहार पूरा ही नहीं होता है, जब बड़े हुए, तब जाकर पता चला कि दुनिया इन तस्वीरों को मधुबनी और मंडला चित्रकला के नाम से जानती है और ये कला पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है।

मंडला का गोल आकार ब्रम्हांड और जीवन चक्र को दर्शाता है तो मधुबनी के भिन्न-भिन्न आकार जीवन चरण को दर्शाते हैं।

मंडला का अर्थ होता है पूर्ण। अगर आप देखें तो केवल गोलाकार ही है जो अपने आप में पूरा है। बारिश की बूँद से लेकर सूरज तक, हर प्राकृतिक वास्तु गोल ही है। और यही मंडला के माध्यम से प्रकट होता है।

जहाँ लाखों अलग-अलग प्रतिरूप अंततः गोले में समां जाते हैं। मंडला ब्रह्माण्ड में मौजूद संतुलन को चिन्हित करती है।

मंडला सिर्फ कला ही नहीं है बल्कि इसका आध्यात्मिक प्रभाव भी होता है जो तनाव दूर करने में ध्यान जितना ही कारगर है।

तनाव और चिंता कम करने के लिए यह चित्रकला एक कारगर उपाय है। यह कोई साधारण चित्रकला नहीं है, यह कला एक विधि है, जिसको विज्ञान का समर्थन प्राप्त है।

ड्रेक्सेल यूनिवर्सिटी के अध्ययन में पाया गया है कि मंडला आर्ट तनाव और घबराहट दूर करने में सहायक है। इसका कारण है इसके बारीक प्रतिरूप। शोधकर्ताओं के अनुसार, जब आप मंडला आर्ट बना रहे होते हैं तो उसकी बारीकियों के कारण पूरा ध्यान आर्ट में लगता है। इससे कॉर्टिसोल हॉर्मोन का स्तर कम होता है और तनाव दूर हो जाता है।

300 से अधिक लोगों पर किये गए इस शोध में यह पाया गया कि 45 मिनट मंडला आर्ट करने से कॉर्टिसोल का स्तर कम होता है, जिससे तनाव और घबराहट कम होती है और नींद अच्छी आती है और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती है।

मधुबनी इसका रेखा प्रधान चित्र होने के कारण चित्र में रेखा की प्रधानता स्पष्ट रूप से दिखती है। निर्बाध फैली हुई धागे जैसी रेखाओं या तिरछी रेखाओं से भरे दोहरी रेखाओं के आकार, प्रस्तुत आकृतियों की सुंदरता पर जोर देता है। नीले, हरे, गुलाबी, नारंगी और लाल जैसे रंगों का सर्वाधिक उपयोग, पौराणिक कथाओं, लोकवार्ताओं, धार्मिक कृत्यों और आधुनिक घटनाओं से चुना गया चित्रों का समुदाय-इसमें ज्यामितीय प्रतिरूप, देवी देवताओं, पुष्प, पशु और पक्षी के रूपांकन शामिल है।

इसमें चित्र के चारों ओर एक बॉर्डर प्रतिरूप जरूर बनाया जाता है जो बने हुए चित्रों को एक अलग रूप देता है और इसे बाकि अन्य चित्रकलाओं से भिन्न बनाता है।

मधुबनी या मिथिला चित्र, भारतीय लोक और जनजातीय चित्रों के बीच अलग ही दिखाई देते हैं। जैसा कि नाम से पता चलता है, इस शैली की उत्पत्ति मिथिला क्षेत्र और उत्तर बिहार के मधुबन नामक एक गांव से हुई हो।

यह चित्रकला एक पारंपरिक कला है जो मिथिला के नेपाल और बिहार के क्षेत्र में बनार्यी जाती है। इस चित्रकला में मिथिलांचल की संस्कृति को दिखाया जाता है। मधुबनी बिहार में भारत और नेपाल के सीमा के पास का एक जिला है, बताते हैं कि यह शहर रामायण के समय भी था। मधुबनी चित्रकला मिथिलांचल में, खासकर बिहार के दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी और नेपाल के जनकपुर, सिरहा, धनुषा जैसे जिलों की मुख्य पारंपरिक चित्रकला है।

## मधुबनी चित्रकला बनाने के अनेक प्रकार हैं

भूमि आकल्पन चित्रकला में पेंटिंग को भूमि पर बनाया जाता है। चौका- पूर्ण इसका उदहारण है, जिसमें पूजा-पाठ के समय कलश स्थापना की जगह बनाना अनिवार्य है। इसे मिथिलांचल में आश्विन या अरिपन कहा जाता है। केरल समेत दक्षिणी राज्यों में भी ओणम् त्यौहार के मौके पर अरिपन चित्रकला बनायी जाती है।

भिति चित्रकला के अंतर्गत चित्रकारी को दीवार पर उकेरा जाता है, जो अन्य चित्रों की अपेक्षा कलात्मक व रचनात्मक होता है। इसमें चित्रकला को चिकनी मिट्टी तथा गाय के गोबर के मिश्रण में बबूल के गोंद को मिलाकर दीवार पे लिपाई की जाती है, जिससे यह दीवार पर चिपका रहता है।

पट चित्रकला का इतिहास समकालीन राजा शिव सिंह के काल से मिलता है। इसमें चित्र कपड़ों पर बनाये जाते हैं तथा चित्र के चारों तरफ बॉर्डर का होना अनिवार्य होता है।

## मधुबनी पेंटिंग का इतिहास

त्रेतायुग में सीता-राम विवाह के समय से ही मधुबनी कला का शुरुआती इतिहास मिलता है, जब जनकपुर की राजकुमारी सीता का विवाह अयोध्या के सूर्यवंशी राजकुमार राम के साथ होना तय हुआ था। तब जनकपुर के राजा के आदेशानुसार पुरे जनकपुर नगर को एक विशेष कलाकारी से सजाया गया था जो मधुबनी के नाम से प्रचलित हुई, जिसमें धरती से लेकर महल को भी अलग-अलग रंगों से रंगकर जनकपुर को एक नया रूप दिया गया।

शुरुआती दौर में मधुबनी पेंटिंग बनाने के लिए घरेलु विधि द्वारा तैयार किये रंगों का ही इस्तेमाल किया जाता था। घरेलु विधि द्वारा रंगों को तैयार करने में हल्दी, केले का पत्ता, लाल रंग के लिए पीपल की छाल तथा चावल के पानी (चौरैठा) का भी उपयोग किया जाता था तथा चित्र बनाने के लिए बांस की कूंची या कलम का प्रयोग किया जाता था।

भारतीय रेलवे ने मधुबनी चित्रकला को पहला औपचारिक रूप से कला के रूप में अपनाया था।

अगर आप आर्ट में दिलचस्पी रखते हैं तो आप किसी भी कागज़ पर पेन से मंडला और मधुबनी बना सकते हैं। इसकी खूबसूरती इसे बनाने की प्रक्रिया में है, अंतिम परिणाम में नहीं इसलिए आप अपने अनुसार इसे बना सकते हैं।



## औरत हूँ मैं

हर एक किरदार बखूबी निभाती हूँ,  
क्योंकि भगवान से भी पहले पूजी जाती हूँ ॥

सम्मान देती हूँ, सम्मान की पात्र भी हूँ,  
मैं स्वाभिमानि हूँ, अभिमान से जीना जानती भी हूँ ॥

रक्षक हूँ, प्रहरी भी हूँ,  
समय आने पर संहार भी करती हूँ ॥

पार्वती हूँ, सरस्वती हूँ, लक्ष्मी भी हूँ,  
समय आने पर काली हूँ, दुर्गा हूँ, चामुंडा भी हूँ ॥

आभारी हूँ प्रकृति की, कभी थक कर उसकी गोद में समाई हूँ,  
कभी सीता के रूप में, कभी सती के रूप में, धरती में समाई हूँ ॥

सोलह श्रृंगार ही आभूषण नहीं है केवल,  
समय आने पर बंदूक व तलवार उठाना भी जानती हूँ,  
देश की बेटी हूँ, देश के लिए कुर्बान होना भी जानती हूँ ॥

कोमल दिल ही सही, हौंसलें बुलंद रखती हूँ,  
मैं औरत हूँ, हर हालत में जीने का जज़्बा रखती हूँ ॥

बेटी बनकर जन्म लेती हूँ, औरत बनकर जन्म देती हूँ,  
इसलिए केवल औरत नहीं, मैं जगत जननी भी कहलाती हूँ ॥

सूर्य के समान तेज रखती हूँ, जल के समान शीतल हूँ,  
अग्नि के समान तपती हूँ, चन्द्रमा के समान सुन्दर हूँ,  
औरत हूँ मैं, अपने भीतर सबकुछ समाती हूँ ॥

हर जगह मैंने पहचान बनाई है, ग्रन्थ से लेकर इतिहास तक,  
धरती से लेकर अंतरिक्ष तक, को भी छूकर आई है ॥

मैं ही आरम्भ हूँ, मैं ही अनंत हूँ,  
मैं ही अंत भी हूँ, क्योंकि मैं ही सृष्टि की रचयिता भी हूँ ॥

मैं कल की नारी नहीं, आज की नारी हूँ,  
विकट परिस्थिति में भी, सब पर भारी हूँ ॥



निधि बेदी गुप्ता  
अकादमिक एसोसिएट

यह कविता अपने गुरु देव की प्रेरणा से ही लिख पा रहा हूँ जिन्होंने सच्चा और पवित्र ज्ञान प्रदान किया उनके आशीर्वाद के बिना यह सम्भव नहीं है जैसे सांसारिक पढ़ाई में गुरु की आवश्यकता है वैसे ही अध्यात्मिक पढ़ाई में भी सद्गुरु की अत्यधिक आवश्यकता है !

जय श्री गुरुवे नमः

## द्वैत और अद्वैत को जीवन में उतारने का प्रयास



प्रवाह शुक्ल  
वित्त एवं लेखा विभाग

द्वैत का अर्थ है दो और अद्वैत का अर्थ है एक। इस संसार में एक में और एक बाकी संसार ही द्वैत है। परन्तु एक और दृष्टिकोण से सोचा जाए तो सब एक ही है। संसार में कुछ भी होता है तो उसका प्रभाव हमारे ऊपर होता है और हमारे कर्म का प्रभाव संसार पर होता है। अध्यात्म की भाषा में एक है दृश्य और एक है द्रष्टा। द्रष्टा है परमात्मा और आत्मा और दृश्य है संसार। ये तो हुआ द्वैत लेकिन देखा जाए तो बिना दृष्टा के दृश्य संभव नहीं और द्रष्टा होने पर दृश्य प्रकट हुआ है तो इस भाव से अद्वैत भी है। अब आप सोचेंगे ये सब का उपयोग क्या है जीवन में? जीवन में इसका उपयोग यह है कि हर मनुष्य को जीवन में रस चाहिए, आनंद चाहिए। द्वैत का अपना रस है और अद्वैत का अपना रस है। अब यह तय करना है कि कब कौन सा रस लेना है। क्रिया और अक्रिया दोनों ही जीवन में जीव के लिए है बहुत आवश्यक हैं। क्रिया करनी है तो अक्रिया से प्राप्त किये हुए विश्राम के बल से ही की जा सकती है और अक्रिया का आनंद आता है जब क्रिया पूरे भाव से की गयी हो जिसमें कर्म योग, ज्ञान योग, भक्ति योग और अन्य योग भी सम्मिलित किये जा सकते हैं। मनुष्य का जन्म सेवा के लिए हुआ है। एक व्यक्ति जो बीज बोता है तो उसके फल तो दूसरे खाते हैं और वो भी खाता है। इसलिए कर्म सेवा के लिए किया जाए तो अति उत्तम है क्योंकि इससे आसक्ति भी नहीं होती और रस भी प्राप्त होता है। देखा जाए तो हम सेवा दूसरे की नहीं कर रहे अपनी ही कर रहे हैं। राजा के राज्य में यदि एक भी व्यक्ति प्रसन्न नहीं है तो अधिक दिनों तक वह राजा को राजा भी रहने नहीं देगा, इसलिए कर्म करते समय द्वैत और अद्वैत को जोड़ कर (उसका योग करके) कर्म करना चाहिए।

प्रायः देखा गया है कि आजकल में समय में लोगों को अपने मतलब से मतलब है और अब तो गाने भी ऐसे बजते हैं। स्मरण रहे कि दूसरे के यहाँ कचरा फेंकने से बहुत शीघ्र ही कचरा अपने घर में भी आ जाएगा। किसी का बुरा करने से बहुत कम ही आसार हैं कि अपना अच्छा हो जाए और हो भी गया तो बहुत दिनों तक नहीं।

लेख के शीर्षक के हिसाब से हमको प्रयास करना है नेक कर्म करने का परन्तु यदि हमसे कुछ भी न बदले इस संसार में तो अद्वैत ज्ञान से हमको इसको एक लीला समझ के आनंद में रहने का प्रयास करना चाहिए। प्रयास शब्द इसलिए उपयोग में लाया है क्योंकि मन / मस्तिष्क बहुत चंचल है और यह प्रायः विरोध करता ही है और वो भी एकमात्र किसी दूसरे का नहीं बल्कि अपने ही विचारों का विरोध करने लगता है।

यह प्रयास प्रबल होगा अक्रिया ध्यान से और यही इससे जुड़ना है तो आप स्वयं भी दूढ़ सकते हैं (ऑनलाइन) और मुझसे भी संपर्क कर सकते हैं।

अब अध्यात्म पर तो इतना लिखा जा चुका है कि कितना भी लिखा जाए वह कम है। बस यह मेरा अपने शब्दों में एक प्रयास है।



हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है।  
उसे हम सबको अपनाना है।

लालबहादुर शास्त्री



सतीश भार्गव  
प्रतिभागी जीएमपीई बैच-6



## में बस हिंदुस्तान हूँ

में अविरल धार गंगा की, में सतलुज, झेलम की आन हूँ  
नहीं मैं हिन्दू नहीं मैं मुस्लिम मैं बस हिंदुस्तान हूँ  
राष्ट्र नाम जप लेता हूँ जब बनता मैं कुरान हूँ  
मत पूछो राष्ट्र धर्म मेरा मैं बस हिंदुस्तान हूँ  
धरती को मैं माता कहता जो मैं गीता ज्ञान हूँ  
मत पूछो राष्ट्र धर्म मेरा मैं बस हिंदुस्तान हूँ  
पगड़ी बांधे, तलवार लिए, गुरु ग्रन्थ की पहचान हूँ  
मत पूछो राष्ट्र धर्म मेरा मैं बस हिंदुस्तान हूँ  
कभी ईद कभी दिवाली मैं सावन, रमजान हूँ  
कभी बनू मैं पैगम्बर कभी मैं कृष्ण भगवान हूँ  
मंदिर मस्जिद दोनों मेरे मैं एक निगाहे बान हूँ  
मत पूछो राष्ट्र धर्म मेरा मैं बस हिंदुस्तान हूँ  
तोड़ दो मुझे और बाँट लो, मैं सोने की खान हूँ  
सदा लुटा हूँ और लूटूँगा क्योंकि हिंदुस्तान हूँ  
मत पूछो राष्ट्र-धर्म मेरा मैं बस हिंदुस्तान हूँ...

## युवा असमंजस



मेरा तपस्वी शृंगार है, सावन के झूलों से दूर हूँ  
में ऋतु पतझड़ की, बसंत के फूलों से दूर हूँ  
बन के घनघोर घटा नहीं छाना हे पर्वतों पर  
में घटता हुआ यौवन, जवानी की भूलों से दूर हूँ  
भंवर मन में उठते हैं, मगर लहरों से दूर हूँ  
खुद में छुपा बैठा, दुनिया के पहरों से दूर हूँ  
धिर चुका हूँ चारों ओर बस अंजान लोगों से  
मुझे भी पहचान ले कभी, उन चेहरों से दूर हूँ..  
में कलश हु रीत का, फिर भी रीतों से दूर हूँ  
साज और सुर साथ हैं, फिर भी गीतों से दूर हूँ  
असीमित विश्वास में कल्पना बस जीत की  
हार को भी जीत लिया, फिर भी जीतों से दूर हूँ..  
गुजर रहा हूँ राह से, बस अपनी राहों से दूर हूँ  
चाहते हो तुम मुझे, मैं तुम्हारी चाहों से दूर हूँ  
थक कर मैं अब चूर हूँ, तुम मुझे बस प्यार दो  
पल भर करूँ आराम जहां, ऐसी बांहों से दूर हूँ



## इसी का नाम तो प्रेम है।

किसी की आँखों में जहां देख लेने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी के होंठों पे नाम आ जाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी के पास आने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी के पास जाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी की आँखों में समाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी के दिल में उतर जाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी की याद आने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी को ना भुला पाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी के लिए आंसू बहाने के नाम ही तो प्रेम है  
किसी के लिए मुस्कुराने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी के लिए आंखें सुजाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी के लिए नींद ना आने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी को सपनों में बुलाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी के लिए सपने सजाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी से रूठ जाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी रूठे को मानाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी की बांहों में आने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी को बांहों में सो जाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी को गले लगाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी से लिपट जाने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी को चूम लेने का नाम ही तो प्रेम है  
किसी के लिए झूम लेने का नाम ही तो प्रेम है

सतीश भार्गव

## उम्मीद



श्रीमती रंजना चौरे

कुछ करने की चाहत लेकर,  
अपनी उम्मीदों को पंख देकर !  
सकारात्मक सोच अपनी रस्वना,  
अपनी उम्मीदों पर स्वरा उतरना !  
डगमगाए न कहीं रह पर कदम,  
रस्वना नज़र मंजिल पर हर दम !  
अपने इरादों को बूढ़ करके,  
बढते रहना साहस भर के !  
लक्ष्य को निर्धारित कर !  
मन को उत्साहित कर,  
तुझे कामयाबी पाना है !  
धैर्य उम्मीद जताना है,  
खुद को अकेला ना जान कभी !  
मंजिल भी मिल जाएगी कभी,  
अपने विश्वास को न टूटने देना !  
मन से लक्ष्य को ना हटने देना,  
नकारात्मकता की न बांध जंजीर !  
खुद को बनाना है अपनी तकदीर,  
उम्मीद पर तू स्वरा उतर जायेगा !  
सफलता का परचम लहराएगा।

संस्थान में दिनांक 02 अक्टूबर 2020 गाँधी जयंती उत्सव धूमधाम से मनाया गया



02 अक्टूबर से 04 अक्टूबर 2020 तक आई-5 सम्मिट 2020 का वर्चुअल आयोजन किया गया



दिनांक 03 अक्टूबर 2020 चौबीसवें स्थापना दिवस के अवसर पर निदेशक महोदय का संबोधन एवं बेस्ट अध्यापक/कर्मचारी पुरस्कार वितरण समारोह



दिनांक 26.11.2020 को ज़ेन गार्डन का उद्घाटन निदेशक महोदय द्वारा किया गया





## दिनांक 14.12.2020 को आईरिस का वर्चुअल आयोजन किया गया



## दिनांक 12.12.2020 को प्रबोधन 2020 का वर्चुअल आयोजन किया गया



दिनांक 04.09.2020 स्टूडियो का उद्घाटन निदेशक महोदय द्वारा किया गया



दिनांक 08.09.2020 को परिसर में वृक्षारोपण आयोजित किया गया



दिनांक 01 जनवरी 2021 को निदेशक महोदय द्वारा आउटडोर जिम को उद्घाटन क्रिकेट स्टेडियम में किया गया



दिनांक 08 जनवरी 2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पच्चीसवीं बैठक का किया गया



दिनांक 14 जनवरी 2021 को निदेशक महोदय द्वारा परिसर में उगाई गई आर्गेनिक सब्जियों का वितरण किया गया



दिनांक 22 जनवरी 2021 को जनरल मैनेजमेंट प्रोग्राम फॉर एक्जीक्यूटिव (जीएमपीई) के बैच 2 और 3 का विदाई समारोह कार्यक्रम



दिनांक 01 फरवरी 2021 को परिसर में उगई ऑर्गेनिक शाक-सब्जियों का वितरण निदेशक महोदय द्वारा किया गया



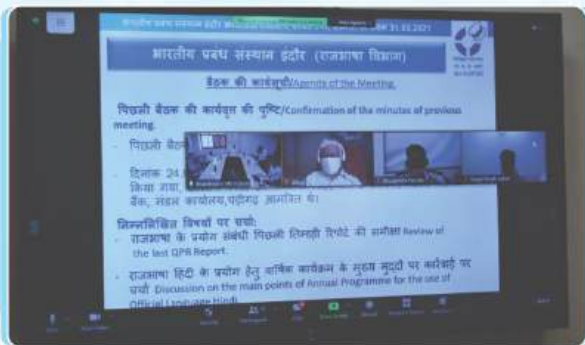
दिनांक 16.02.2021 को संजीवनी का उद्घाटक निदेशक महोदय द्वारा किया गया



दिनांक 28.02.2021 को जीएमपीई के पांचवें बैच का विदाई समारोह आयोजित किया गया



दिनांक 31.03.2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई



## दिनांक 06.04.2021 को परिसर में कोविड टीकाकरण आयोजित किया गया



## दिनांक 05.06.2021 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया



स्थापन दिवस के अवसर पर दिनांक 03 अक्टूबर 2020 को ज्ञान शिखर पंचम अंक का विमोचन निदेशक महोदय द्वारा किया गया

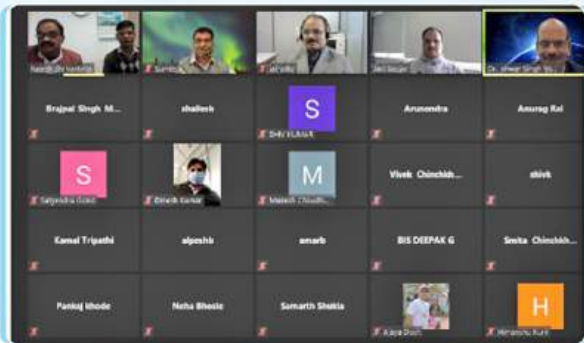
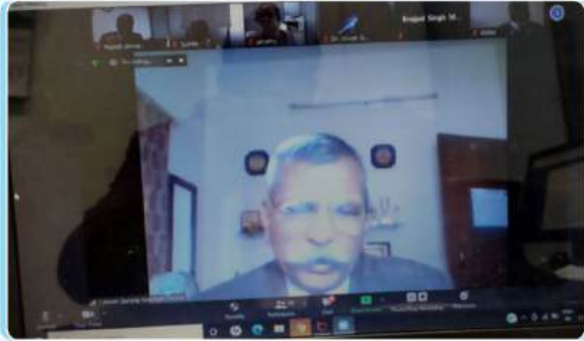


दिनांक 14.06.2021 को कोविड के दौरान दिवंगत आत्माओं की शान्ति हेतु प्रार्थना सभा का आयोजन





दिनांक 17 दिसम्बर 2020 को जूम लिंक पर ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया



दिनांक 25.06.2021 को हिन्दी कार्यशाला का ऑनलाइन आयोजन किया गया

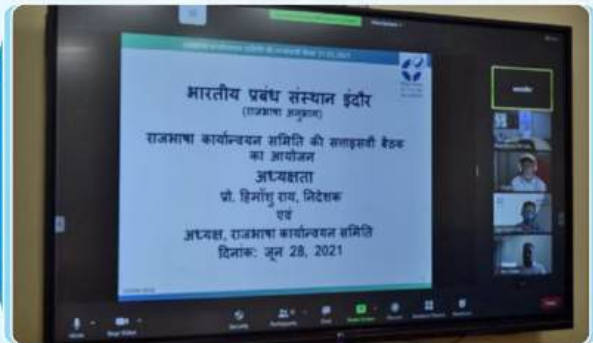


म.प्र. पुलिस के साथ समझौता ज्ञापन

म.प्र. औद्योगिक विकास निगम के साथ समझौता ज्ञापन



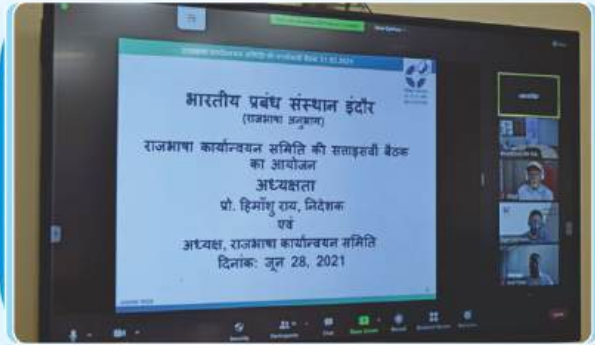
## दिनांक 30.09.2020 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चौबीसवीं बैठक का ऑनलाइन आयोजन



## दिनांक 29.06.2021 को ग्रामीण इमर्शन कार्यक्रम का वर्चुअल आयोजन किया गया



दिनांक 28 जून 2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सप्ताहसर्वी बैठक का आयोजन ऑनलाइन किया गया



निदेशक महोदय द्वारा प्रबंध विकास कार्यक्रम (एमडीपी) का उद्घाटन



वर्ष 2020-21 हेतु केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों की स्वच्छता सर्वेक्षण में आवासीय एवं कार्यालय परिसर दोनों श्रेणियों में संस्थान को स्वच्छता हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ



आईपीएम इंडक्शन 2021 का आयोजन ऑनलाइन किया गया



इक्कीसवें और बाइसवें दीक्षांत समारोह का आयोजन वर्चुअल दिनांक 13 जून 2021 को किया गया



सत्रहवें सीसीबीएमडीओ बैच का उद्घाटन निदेशक महोदय द्वारा ऑनलाइन किया गया



एनसीजीजी के साथ समझौता ज्ञापन किया गया



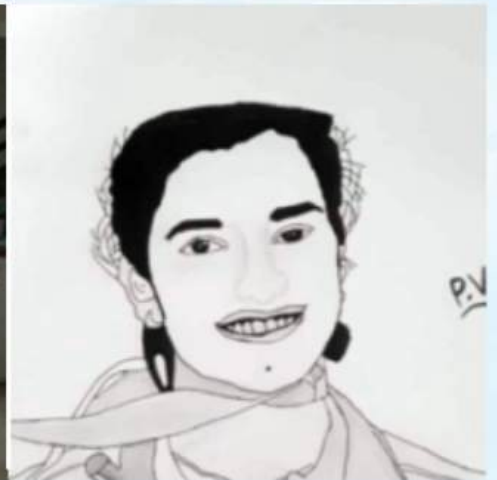
संकाय विकास कार्यक्रम विदाई समारोह



एनएसजी कमांडो द्वारा संस्थान में माँक ड्रिल का प्रदर्शन किया गया



स्वतंत्रता दिवस 2021 पर फैन्सी ड्रेस एवं पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन बच्चों के लिए किया गया







## अथर्व 2021 का आयोजन



## सीईआरई (सेरे) 2021 का वर्चुअल आयोजन



## ईपीजीपी का वर्चुअल उद्घाटन निदेशक महोदय द्वारा किया गया



## आरईपी (पीजीपी) 2021 का उद्घाटन निदेशक महोदय द्वारा किया गया







सिद्धिमुल प्रबन्धनम्  
भा. प्र. सं. इन्दौर  
IIM INDORE

## भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर

प्रबंध शिखर, राऊ-पीथमपुर रोड, इन्दौर - 453556 (म.प्र.), भारत  
फोन : +91 731 2439666, फैक्स : +91 731 2439800

